।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नवतत्त्व सार्थ)

प्रश्न १. अ. ये कौन–से तप हैं, पहचानिए। (५)

१. जिस अनुष्ठान से पाप की शुद्धि हो।

२. आत्म कल्याण की भावना से शरीर द्वारा कष्ट सहन करना।

३. मन को एकाग्र करने का नाम।

४. जीवन निर्वाह की चीजों का संक्षेप करना।

५. उदर को कुछ खाली रखना।

ब. सही या गलत लिखिए। (५)

१. कर्म का सर्वथा क्षय होना मोक्ष है।

२. काल के पांच भेद हैं।

३. जिससे मनुष्य भव की प्राप्ति हो वह गति नामकर्म है।

४. दूसरों की बुराई करना राग है।

५. पुण्य तत्त्व के ४२ भेद हैं।

क. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तम्भ	**'ब' स्तम्भ**
१. तीर्थ सिद्ध	अ. धर्मध्यान
२. बंध स्वरूप	ब. गौतम आदि गणधर
३. जिन प्रवचन में रुचि होना	क. कर्म का प्रवेश द्वार
४. संसार भावना	ड. मोदक का दृष्टांत
५. आस्रव तत्त्व	इ. भगवान मल्लीनाथ

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। (१०)

१. प्रदेश बंध २. प्रत्येक बुद्ध सिद्ध ३. सामायिक चारित्र

४. शीत परिषह ५. भावास्त्रव ६. दानान्तराय

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब दीजिए। (२०)

१. किन्हीं ५ पर्याप्तियों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. काल द्रव्य का स्वरूप बताइए।

३. शरीर नाम कर्म की प्रकृतियों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

४. ज्ञानावरणीय की पाप कर्म की प्रकृतियों को विस्तार से बताइए।

P.T.O

५. बाह्य तप के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. १२ भावनाओं का विवेचन कीजिए।

२. किन्हीं १५ परिषहों का विवेचन कीजिए।

(खण्ड ख – जैनत्व की झांकी)

प्रश्न ५. अ. जोड लगाइए। **(५)**

लेखक के नाम	**किताब**
१. आचार्य उमास्वाती	अ. योगवसिष्ठ
२. श्री कौशाम्बीजी	ब. जैनत्व की झांकी
३. डॉ. राधाकृष्णन्	क. भारतीय संस्कृति और अहिंसा
४. श्री. रामचन्दजी	ड. तत्वार्थ भाष्य
५. उपाध्याय अमरमुनिजी	इ. भारतीय दर्शन का इतिहास

ब. सही या गलत बताइए। **(५)**

१. जीवन के लिए भोजन आवश्यक है।

२. ज्ञान के बिना मनुष्य बहरा होता है।

३. भारतवर्ष दर्शन की जन्मभूमि है।

४. बौद्ध संस्कृति अवतारवाद में विश्वास करती है।

५. कर्म बंधन से रहित होने का नाम मुक्ति है।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब दीजिए। **(१५)**

१. गुरु के लक्षण बताकर उनके व्रतों को संक्षेप में बताइए।

२. जैन शास्त्रों में दान के कितने प्रकार हैं, बताकर किन्हीं २ दान का स्वरूप बताइए।

३. त्रिपदी को स्पष्ट कीजिए।

४. जैन धर्म, बौद्ध धर्म की शाखा नहीं है स्पष्ट कीजिए।

५. तत्त्व प्रतिपादन की शैली कितनी बतायी है और उसमें तत्त्वों की संख्या कितनी बतायी है यह लिखते हुए मोक्ष तत्त्व का स्वरूप बताइए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. कर्मवाद का व्यावहारिक रूप स्पष्ट कीजिए।

२. तीर्थंकर कौन होते हैं? उनका स्वरूप बताइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – १)

प्रश्न क्र. १. अ. निम्नलिखित धातु, शब्दों के यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए। **(१०)**

रूप	मूलशब्द/धातु	लकार/लिङ्ग	विभक्ति/पुरुष	वचन
१. गणयेतम्				
२. भवताम्				
३. अभ्रमन्				
४. करेण्वाः				
५. निधौ				

ब. निम्नलिखित पदों का सन्धि विच्छेद कीजिए। **(५)**

१. शब्देनाभिधियते २. शिलौचित्यम् ३.भूमावीश्वरः

४. सप्तर्षि: ५. मध्वरि:

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. राज्य की फिर से प्राप्ती की आशा भी नहीं थी।

२. उसने इस विषय में बहोत चिंतन किया।

३. इसी प्रकार बहुत दिन बीत गये।

४. मेरे शरीर में शक्ति नहीं हैं।

५. यह मैं नहीं चाहता हूँ।

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथा निर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सापेक्ष अव्यय किसे कहते हैं? उनके स्वनिर्मीत तीन उदाहरण लिखिए।

२. 'जन्म जन्म यदभ्य.....' इस सुभाषित को शुद्ध एवं अर्थ सहित लिखिए।

३. 'एतद्' (पुं.) एवं 'हर्तृ' शब्द के सभी विभक्तियों के रूपों को लिखिए।

४. 'दर्श' धातु के सभी लकारों में रूप लिखिए।

५. निम्नलिखित समय को संस्कृत में लिखिए।

अ. १.२० ब. ५.४० क. ९.५५ ड. ११.३५ इ. ३.४५

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. संख्यावाचक शब्दों का संक्षेप में परिचय देते हुए क्रमवाचक संख्याविशेषण कैसे बनते हैं? सोदाहरण लिखिए।

P.T.O

२. अव्यय का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।

(खण्ड ख – तत्त्वार्थ सूत्र)

प्रश्न ५. अ. सही या गलत बताइए। **(५)**

१. एक साथ एक आत्मा में एक से लेकर उन्नीस तक परिषह होते हैं।

२. विपरीत श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

३. झूठी लिखा पढी करना कूटलेखन–क्रिया है।

४. रागसहित संयम को 'सरागसंयम' कहते हैं।

५. काल संख्यात समय वाला है।

ब. जोड लगाइए **(५)**

'अ' स्तम्भ	**'ब' स्तम्भ**
१. अवधिज्ञान	अ. ज्योतिषी देव स्थिर
२. मुक्त जीव की गति	ब. मेरुपर्वत
३. जम्बूद्वीप के मध्य में	क. क्रिया
४. मनुष्य लोक के बाहर	ड. रूपी द्रव्यों को जानता है
५. हलन चलन का नाम	इ. विग्रह रहित

प्रश्न ६. अ. भेद बताइए। (कोई ३) **(६)**

१. आयुकर्म २. त्रस ३. विनय ४. मनुष्य

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ सूत्र का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. पीतपद्म शुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु। २. संसारिणस्त्रसस्थावराः।

३. बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ९ ग्रैवेयक देवों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति बताइए।

२. ध्यान किसे कहते हैं? कौन–से गुणस्थानवाले जीवों को कौनसा–कौनसा ध्यान होता है बताइए।

३. अतिचार किसे कहते हैं? सम्यग्दर्शन के अतिचारों को बताइए।

४. दर्शनमोहनीय कर्म का आश्रव कितने कारणों से होता है?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ८ कर्मों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति को बताकर किन्हीं ४ कर्मों के भेद लिखिए।

२. दसवें अध्ययन का सार लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – २)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित शब्द और धातु के यथा निर्दिष्ट रूप लिखिए। **(१०)**

शब्द/धातु	लिङ्ग/लकार	विभक्ति/पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१. प्रचेतस्	पुल्लिंग	सप्तमी			
२. धीमत्	पुल्लिंग	तृतीया			
३. ऊर्ज्	नपुं. लिं.	चतुर्थी			
४. तर्क्	लोट् (आत्मने.)	उत्तम पुरुष			
५. सु	विधिलिङ् (परस्मै.)	मध्यम पुरुष			

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की सन्धि कीजिए। **(५)**

१. लक्ष्यम् + अभवत् २. मृत्योः + बिभेषि ३. सम् + चालक

४. सन् + अच्युतः ५. अकथयत् + च ६. जगत् + वशे

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित ५ सवालों का यथा निर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(५)**

१. किम् शब्द के आगे कौन-कौन-से अव्यय जोडने से अनिश्चितता व्यक्त होती है?

२. शब्दों को लगने वाले प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं? कौन-से?

३. विसर्ग को उत्व कब होता है, और उसके बाद क्या होता है?

४. परिणाम वाचक विशेषण कितने प्रकार के हैं? कौन-से?

५. धातुओं को कितने पदों में बांटा गया है? कौन-से?

६. आगम संधि कितने प्रकार की है? कौन-सी?

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१५)**

१. चतुर्थी उपपद विभक्ति के नियम स्वरचित उदाहरणों के साथ लिखिए।

२. 'क्रुञ्च' एवं 'घृतस्पृश्' शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए।

३. 'विपदि धैर्यं.....' इस सुभाषित को शुद्ध एवं अर्थ सहित लिखिए।

४. 'कृष्' धातु के आत्मनेपद में सभी लकारों के रूप लिखिए।

५. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. मन की निराशा का नाश करने के लिए शब्दबोध निरर्थक है।

आ. दुर्जन के साथ मैत्री और स्नेह भी नहीं करना चाहिए।

इ. संपूर्ण राज्य व्यवस्था प्रजा के कल्याण के लिए थी।

ई. अध्यापक छात्रों को उत्तर पुस्तिका देता है।

P.T.O

उ. घर से नजदीक कोई एक उद्यान था।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. संवाद किसे कहते हैं? उसके नियमों को लिखते हुए एक स्वरचित संस्कृत संवाद लिखिए।

२. गणों का परिचय अपनी भाषा में लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – १)

प्रश्न क्र. ६. अ. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. प्राकृत में कैसे वर्णों का संयुक्त व्यंजन वर्ण नहीं होता है?

२. कौनसा वर्ण संयुक्त होगा तो वहां द्वित्व नहीं होता?

३. भगवान के अंतेवासी का वर्णन किस सूत्र में है?

४. क्रियावाची शब्दों को क्या कहते हैं?

५. कौन कारक नहीं होता है?

ब. प्राकृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. मुनि क्षुधा और पीपासा को सहन करते हैं।

२. हाथी शरीर को जल से स्वच्छ करता है।

३. हम सब गुरु का विनय करते हैं।

४. दस प्रकार के श्रमण धर्म हैं।

५. सेवक सेवानिष्ठ होते हैं।

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. स्वर–परिवर्तन २. सरल व्यंजन ३. सर्वनाम

४. नाम ५. विभक्ति ६. क्रिया

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथा निर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'कृष्ण वासुदेव' के कथानक से क्या शिक्षा मिलती है लिखिए।

२. संयुक्त व्यंजन के नियमों को सोदाहरण लिखिए।

३. 'पढ' धातु के सभी लकारों में रूप लिखिए।

४. 'भासा' शब्द के सभी रूपों को लिखिए।

५. निम्नलिखित शब्दों के लिए प्राकृत शब्द लिखिए।

अ. सुनकर आ. दोपहर इ. ढेर

ई. वनस्पति उ. वैभव

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. प्राकृत–वर्णमाला का परिचय देते हुए हमें प्राकृत भाषा क्यों सीखनी चाहिए अपनी भाषा में लिखिए।

२. कारकों का परिचय देते हुए सभी कारकों के प्राकृत में स्वनिर्मित वाक्य लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १ से ५)

प्रश्न १. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. विनीत शिष्य गुरु के आसन से ऊंचा बैठें।

२. श्रमण जीवन में २२ परिषह होते हैं।

३. चतुर्थ अध्ययन का नाम असंस्कृत है।

४. धर्म का श्रवण आसान है।

५. मरण के दो प्रकार है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. सकाममरण को स्पष्ट कीजिए।

२. जीवन असंस्कृत क्यों और कैसे है, उसे अध्ययन के आधार पर बताइए।

३. मनुष्यत्व प्राप्ति में बाधक कारण बताइए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. विनय अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

२. पांचवें अध्ययन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(खण्ड ख – जैन तत्त्व दीपिका)

प्रश्न ४. सही पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. आत्मा के परिणाम विशेष को ..... कहते हैं। (सम्यक्त्व, अपूर्वकरण, करण)

२. अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में ..... बोलों का बंध नहीं होता है। (५,७,११)

३. मैथुन करने की अभिलाषा को ..... कहते हैं। (भाववेद, द्रव्यवेद, स्त्रीवेद)

४. पांच वर्षों का ..... होता है। (मास, वर्ष, युग)

५. शुक्रतारा ..... योजन ऊपर है। (२९४, ८९१, ८८०)

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. विस्तार रुचि २. द्रव्यत्व गुण ३. सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष

४. बंध ५. समय ६. मुखवस्त्रिका

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. किस-किस गुणस्थान में किस-किस कर्म की उदीरणा होती है?

P.T.O

२. अंतर्द्वीप किसे कहते हैं? वे कितने और कहां हैं?

३. निगोद का स्वरूप बताइए।

४. पुद्‌गल का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. नय किसे कहते हैं? उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. सम्यक्त्व के भेदों को स्पष्ट करते हुए सम्यक्त्व के आठ आधार कौन-से हैं, बताइए।

(खण्ड ग – इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ)

प्रश्न ८. अ. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तम्भ	**'ब' स्तम्भ**
१. आचार्य जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण	अ. आवश्यक सूत्र पर टीका
२. आ. हरिभद्रसूरी	ब. तत्त्वार्थसूत्र जैनागम समन्वय
३. उपाध्याय देवेन्द्रमुनिजी म.	क. न्यायावतार ग्रंथ
४. आ. सिद्धसेन दिवाकर	ड. विशेषावश्यक भाष्य
५. आ. आत्मारामजी म.	इ. इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ

ब. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. आचार्य हरिभद्रसूरी ने १४४० ग्रंथों की रचना की थी।

२. आचार्य आनंदऋषिजी म. सा. ने चिचोंडी में दीक्षा ग्रहण की।

३. आचार्य अमोलकऋषिजी म. सा. आगम के विशिष्ट ज्ञाता थे।

४. आचार्य धर्मदासजी म. सा. के पिता का नाम जीवनभाई था।

५. आचार्य सिद्धसेन दिवाकर मराठी भाषा के प्रतिभासंपन्न विद्वान थे।

प्रश्न ९. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(१०)**

तीर्थंकरों के नाम	**माता**	**पिता**	**जन्म**	**निर्वाण**
१. चन्द्रप्रभु				
२. शीतलनाथ				
३. अनन्तनाथ				
४. कुन्थुनाथ				
५. मुनिसुव्रत				

प्रश्न १०. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कौन-कौन-से ग्रन्थों में, वेदों में भगवान अरिष्टनेमी का वर्णन आया है?

२. आ. हरिभद्र सूरी अपने प्रत्येक ग्रंथ के अंत में 'विरह' का प्रयोग क्यों करते थे बताइए।

३. वीर लोंकाशाह ने कोषाध्यक्ष पद अथवा मंत्री पद को क्यों त्याग दिया बताइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग ३)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके वह कौन–सा समास है, लिखिए। **(१०)**

सामासिक पद	समास विग्रह	समास नाम
१. भेरीपटहम्		
२. सरसिजम्		
३. लज्जाहिनः		
४. अनैक्यम्		
५. सप्ताहम्		

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए। **(५)**

१. अस्माभिः उद्याने भ्रमितव्यं।

२. सः एकं स्यूतोऽपि धारयति।

३. आचार्यः विद्याधनं ददाति।

४. ईश्वरेण जनसेवा क्रियते।

५. सेवकः नृपं सेवते।

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१०)**

१. भवती निष्ठा। भवत्याः मातापितरौ भ्रमणार्थं विदेशं गन्तुं उद्यतौ। पत्रं लिखित्वा तौ प्रति शुभाशंसा प्रेषयेत्।

२. कृदन्त प्रत्ययों से निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. तुम सब खेलने के लिए मुंबई गए थे। ब. मैं खरीद कर किताब पढता हूं।

क. मैंने बालकों को कहानी कही। ड. खाते हुए बालक को देखो।

इ. वे सब पुस्तक पढे।

३. निम्नलिखित संवाद रिक्त स्थानों की पूर्ति से पूर्ण कीजिए।

प्रथमः – मित्र! ..... (युष्मद्) कुत्र गच्छसि?

द्वितीयः – मित्र! ..... (अस्मद्) विद्यालयं गच्छामि।

प्रथमः – त्वं ..... (किम्) कक्षायां पठसि?

द्वितीयः – अहं नवम्यां ..... (कक्षा) पठामि।

प्रथमः – ..... (विद्यालय) कति छात्राः पठन्ति?

द्वितीयः ..... (अस्मद्) विद्यालये पञ्चाशत्छात्राः पठन्ति।

P.T.O

प्रथमः – किम्? विद्यालये ..... (उद्यान)अस्ति?

द्वितीयः – आम्। एकं रम्यम् उद्यानं ..... (विद्यालय) पूर्वभागे अस्ति।

प्रथमः – मित्र! क्रीडाङ्गनम् ..... (अस् लट्.) न वा?

द्वितीयः – मित्र! ..... (विशाल) क्रीडाङ्गनम् अस्ति।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. लिट् और लुङ्लकार का प्रयोग कब करते हैं यह बताकर दोनों के स्वनिर्मित उदाहरण लिखकर गम्–गच्छ धातु के दोनों लकारों में रूप लिखिए।

२. कति/कियत् इन प्रश्नार्थक शब्दों का प्रयोग कब किया जाता है यह बताते हुए कति, कियत् और कियती शब्द के सभी रूप लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – २)

प्रश्न क्र. ५. वाच्य परिवर्तन कीजिए। **(५)**

१. रायसेवगेहिं सो नरिदों समीवमाणिओ।

२. तस्स वयणं सोच्चा मुक्खेण भणियं।

३. ब्रह्मणो परिसासु धम्मं कहेइ।

४. सेवगेण भएण कहियं।

५. निवो चोरं पासीअ।

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित शब्द किस कृदन्त के है, पहचानिए। **(५)**

१. दाऊणं	२. आगच्छतं	३. गिण्हिउं
४. णायव्वं	५. भासीअ	६. लिहिअं

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। (कोई ५) **(१०)**

१. पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु में कौन–कौन–से प्रत्यय जोडने से संबंधक भूतकृदन्त बनते हैं?

२. ऋकारान्त शब्द को 'ऋ' के स्थानपर क्या क्या आदेश होते हैं, सोदाहरण लिखिए।

३. भूतकृदन्त का कृत् प्रत्यय किसमें किसमें आता है?

४. सर्वनाम का प्रयोग कहां–कहां पर होता है?

५. धातु से कितने प्रत्यय आते हैं, कौन–से?

६. वाच्य कितने प्रकार के हैं, कौन–से?

प्रश्न क्र. ८. किन्हीं चार सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(२०)**

१. वाच्य किसे कहते हैं? उसके भेदों का अपने भाषा में स्वरूप लिखिए।

२. 'को महंतयमो?' इस कहानी से आपको क्या सीख मिली लिखिए।

३. कृदन्त का परिचय देते हुए भूतकृदन्त का स्वरूप लिखिए।

४. 'रममाण' शब्द के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए।

५. निम्न धातुओं से हेत्वर्थ कृदन्त शब्द बनाइए

चिट्ठ	गच्छ	कर	पा	जाण
मुच	हो	ण्हा	णच्च	धा

P.T.O

६. निम्नलिखित गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाइ, सो सिक्खं लद्धुं मरिहइ।।

(खण्ड ग – भावना योग एक विश्लेषण)

प्रश्न क्र. ९. ये किस भावना के लक्षण या भेद है, बताइए। **(५)**

१. अनुबद्ध विग्रह २. धर्मसंघ का अवर्णवाद ३. निमित्तकथन करना
४. कौत्कुच्य ५. मार्गदूषणा

प्रश्न क्र.१०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ज्ञान चतुष्क भावनाओं का स्वरूप अपने शब्दों में लिखिए।
२. अनित्यादि १२ भावनाओं का संक्षेप में परिचय दीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण नय तत्त्वालोक)

प्रश्न १. अ. निम्न पदों के कोई १ भेद लिखिए। **(५)**

१. सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष २. समारोप ३. विकल पारमार्थिक प्रत्यक्ष

४. हेत्वाभास ५. नय

ब. निम्न उदाहरण किसके हैं, पहचानिए। **(५)**

जैसे – स्तम्भ का कुम्भ में न पाया जाना। – इतरेतराभाव

१. सीप में 'यह चांदी है।' ऐसा ज्ञान होना।

२. यह मनुष्य दक्षिणी होना चाहिए।

३. यह वहीं जिनदत्त है।

४. सत्ता सब में पाई जाती है अत: विश्व एक रूपी है।

५. चेतन कभी अचेतन नहीं होता।

क. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. स्व और पर को निश्चित रूप से जाननेवाला ज्ञान क्या है?

२. जो वस्तु जैसी नहीं है वैसी मालूम होना क्या है?

३. त्रिकाल सम्बन्धी तादात्म्य का अभाव क्या है?

४. अविनाभाव बताने का स्थान क्या है?

५. अपने अभीष्ट अंश के अतिरिक्त अन्य अंशों का अपलाप क्या है?

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. पारमार्थिकं पुनरुत्पत्तावात्ममात्रापेक्षम्।

२. किमित्यालोचनमात्रमनध्यवसाय:।

३. अप्रतीतमनिराकृतमभीप्सितं साध्यम्।

४. तेभ्य: स्व-परव्यवसायस्यानुपपत्ते:।

५. तुरीये प्रथमादीनामेवम्।

६. वस्तु पर्यायवद् द्रव्यमिति धर्मिणो:।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. क्या सन्निकर्ष स्व-पर व्यवसायी है? स्पष्ट कीजिए।

२. दर्शन, अवग्रह आदि में भेद है या अभेद? स्पष्ट कीजिए।

३. व्यवहार नय और शब्द नय के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

४. वाद का लक्षण क्या है? उसके कितने अंग है? अंग के नियम क्या-क्या है?

५. प्रमाण के फल का निरूपण कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. परोक्ष प्रमाण किसे कहते हैं? स्मरण और आगम परोक्ष को विस्तार से समझाइए।

२. सप्तभंगी का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके भेदों को विस्तार से समझाइए।

(खण्ड ख – कर्मग्रन्थ भाग १)

प्रश्न ५. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. व्यंजनावग्रह कितने इन्द्रियों से होता है?

२. इस कर्मग्रंथ में कितनी गाथाएं है?

३. महाप्रतिहार्य कितने होते हैं?

४. सत्तायोग्य कितनी प्रकृतियां होती है?

५. श्रीमद् देवेन्द्रसूरी द्वारा कितने कर्मग्रंथों की रचना हुई?

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परीभाषा लिखिए। **(६)**

१. कर्मजा बुद्धि २. अनन्तानुबंधी ३. साता वेदनीय

४. एकेन्द्रिय जातिनामकर्म

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथा का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. निरयतिरिनरसुरगई इगबियतिय चउपणिंदिजाइओ।
ओराल विउव्वाहारग तेयकम्मण पणसरीरा।।

२. परघाउदया पाणी परेसि बलिणं पि होइ दुद्धरिसो।
उससणलद्धिजुत्तो हवेइ उसासनामवसा।।

३. मइ सुय ओही मण केवलाणि नाणाणि तत्थ मइनाणं।
वंजणवग्गह चउहा मणनयण विणिंदिय चउक्का।।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. दर्शनमोहनीय किसे कहते हैं? उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान में अंतर बताइए।

३. श्रुतज्ञान के २० भेदों में से किन्हीं ५ भेदों का स्वरूप बताइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ज्ञानावरणीय कर्म और आयु कर्म के बंध के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

२. संहनन और संस्थान किसे कहते हैं? उनके भेदों का स्वरूप बताइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – दशवैकालिक सूत्र संपूर्ण)

प्रश्न १. अ. सही पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. मुधादायी और मुधाजीवी दोनों ..... को प्राप्त होते हैं। (सुगति, दुर्गति, नरकगति)

२. कीडानगर, जिसमें सूक्ष्म चींटिंया तथा अन्य सूक्ष्म जीव रहते हैं, उसे ..... कहते हैं।
(हरितसूक्ष्म, प्राणीसूक्ष्म, उत्तिंगसूक्ष्म)

३. जो कुन्थु और पिपीलिका हैं, वे सब ..... हैं। (त्रीन्द्रिय, त्रस, पंचेन्द्रिय)

४. दशवैकालिक सूत्र के सातवें अध्ययन का नाम ..... है। (सुवाक्यशुद्धि, पिण्डैषणा, सभिक्षु)

५. धर्म उत्कृष्ट ..... है। (तप, संयम, मंगल)

ब. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. दूसरे अध्ययन में कितनी गाथा है?

२. अनाचीर्ण कितने हैं?

३. सूक्ष्मजीव कितने प्रकार के हैं?

४. ब्रह्मचर्यव्रत की कितनी बाड हैं?

५. विनयसमाधि अध्ययन के कितने उद्देशक हैं?

प्रश्न २ . निम्नलिखित प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ लिखकर उसके कितने भेद हैं, बताइए। **(१०)**

१. समाहिट्ठाणा २. कसाए ३. आयार समाहि

४. विनय समाहि ५. तवे

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. आचार्य की महिमा को कितनी उपमाओं से सुशोभित किया है बताइए।

२. परिभोगैषणा के दोष कितने और कौन-से हैं?

३. साधु-साध्वी के लिए कौन-से कुल और प्रकोष्ठ में जाने का निषिद्ध किया है बताइए।

४. निम्नलिखित गाथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निर्ग्रन्थ के लिए रात्रिभोजन से कौन-से दोष लगते हैं, उसे स्पष्ट कीजिए।

२. लोकपूज्य बननेवाले साधक की कोई भी १५ अर्हताएं स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन ६ से २०)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत बताइए। (५)

१. शिक्षाशील के ८ स्थान बताये हैं।

२. वर्षधर पर्वत सब पर्वतों में श्रेष्ठ है।

३. श्रावस्तीनगर में चित्त और सम्भूत दोनों का समागम हुआ।

४. हरिकेशबल मुनि श्वपाक, चांडाल कुल में उत्पन्न हुए थे।

५. जो ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हैं, उन्हें देव, दानव आदि कोई भी नमस्कार नहीं करते।

ब. निम्नलिखित प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ बताइए। (५)

१. नरयं २. सयणं ३. भिक्खू

४. देविन्दो ५. आयारं

प्रश्न ६. निम्नलिखित सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. वनस्पतिकाय और त्रीन्द्रिय में गया हुआ जीव उत्कृष्ट कितने काल तक वहां रहता है?

२. मिथिला नगरी में दुःखित, अशरण और पीडित पक्षी आक्रन्दन क्यों कर रहे हैं?

३. कपिल मुनि ने कौनसी नगरी से विहार किया और कितने चोरों को प्रतिबुद्ध किया?

४. बालजीव की कितने प्रकार की गति होती है? कौनसी?

५. आयुष्य कितने और कौन–से प्रकार का है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. मृगापुत्र ने अपने माता–पिता को दीक्षा की आज्ञा के लिए कैसे समझाया?

२. बहुश्रुतता प्राप्ति के कितने और कौन–से कारण हैं, बताइए।

३. ब्रह्मचर्यसमाधि में बाधक १० बातों को बताइए।

४. मुनि और राजा के सनाथ–अनाथ संबंधी उत्तर प्रत्युत्तर को बताइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. १७ वें अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

२. राजर्षि महाबल ने सिद्धिपद कैसे प्राप्त किया, उसे स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – ४)

प्रश्न क्र. १. अ. निम्नलिखित तद्धित शब्दों के प्रयोग से संस्कृत में स्वनिर्मित वाक्य बनाइए। **(५)**

१. गरिमा २. भौतिक ३. दैवीय

४. यौष्माकीन ५. वानस्पत्यम्

ब. चित्रम् आधृत्य शब्दसूची–सहायतया संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखेयुः। **(५)**

(शब्दसूची :– चिक्रोडः, वृक्षः, कुटीरः, कन्दुकः, काष्ठफलकम्,
श्वानः, नगाः, छायाचित्रग्राहकः, अग्नि, जलम्)

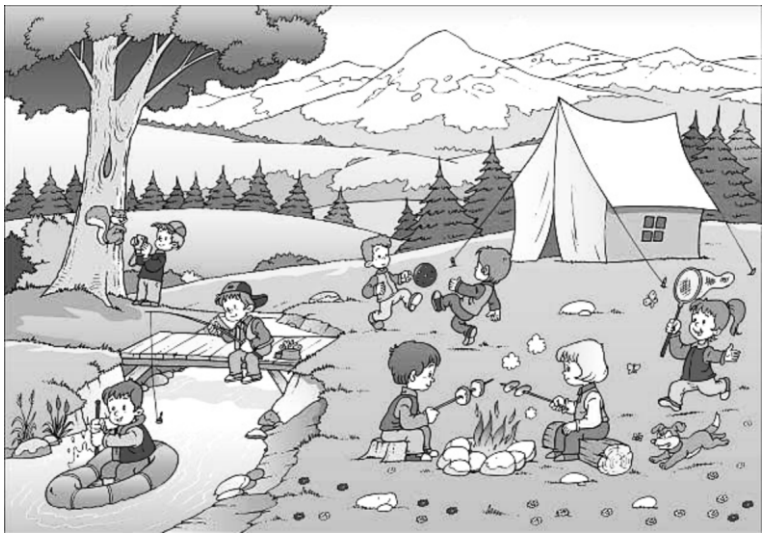

प्रश्न क्र. २. मुहावरों का हिंदी अर्थ बताकर संस्कृत में वाक्य में प्रयोग कीजिए। (कोई ५) **(१०)**

१. वरं मृत्युः न पुनरपमानः। २. शासनात् करणं श्रेयः।

३. यत्नं विना रत्नं न लभ्यते। ४. बह्वारम्भे लघुक्रिया।

५. कर्णिनी वै भूमैः। ६. भस्मीभू

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१०)**

१. इच्छार्थक क्रिया कैसे बनती है ? यह बताते हुए स्वनिर्मित पांच प्रेरणार्थक वाक्य संस्कृत में लिखिए।

२. किन्हीं पांच 'स्त्री प्रत्ययों' का प्रयोग करके स्वनिर्मित संस्कृत वाक्य लिखिए।

३. अपत्यार्थक तद्धित प्रत्ययों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

४. 'प्रेमबंधन' कथा का सार अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न क्र. ४. 'गुरोर्महिमा' इस विषय पर संस्कृत में निबंध लिखिए। **(१०)**

P.T.O

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – ३)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कीजिए। **(५)**

१. कसायमुत्तो २. जिणवयणं ३. गुणसंपन्नो
४. पइदिणं ५. सेयंबरो

प्रश्न क्र. ६. परिभाषा लिखिए। (कोई ५) **(१०)**

१. तद्धित प्रत्यय २. प्रेरक किया ३. प्रयोज्य कर्ता
४. अविकारी शब्द ५. द्वन्द्व समास ६. विभक्ति

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. संख्यावाचक शब्दों के किन्हीं पांच नियमों को सोदाहरण लिखिए।
२. 'गयाणुगईओ लोगो' इस कहानी का सार संक्षेप में लिखिए।
३. पंचमी विभक्ति के नियमों को स्वरचित वाक्यों से लिखिए।
४. निम्नलिखित गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहकम्मं।
जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्टइ।।

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किसी एक सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. तद्धित प्रत्ययों का परिचय देकर उनके प्रयोग से प्राकृत में स्वरचित १० वाक्य लिखिए।
२. अव्यय का परिचय देकर उनके प्रयोग से प्राकृत में स्वरचित १५ वाक्य लिखिए।

(खण्ड ग – ज्ञाताधर्मकथा सूत्र)

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित जीव किस गति में गये हैं, लिखिए। **(५)**

१. धर्मरुचि अणगार २. कंडरीक राजा ३. थावच्चा पुत्र
४. जिनपालित ५. पोट्टिला आर्या

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. तेतलिपुत्र अध्ययन से आपने क्या शिक्षा ग्रहण की? क्यों? स्पष्ट कीजिए।
२. रोहिणीज्ञात अध्ययन से आपने क्या सीखा? कैसे? स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग २)

प्रश्न १. अ. नीचे दिये हुए शब्दों में से अनुचित शब्द को अलग कीजिए। **(५)**

१. नरकगति, नरकानुपूर्वी, नरकजाति, नरकायु

२. दुर्भगनाम, दुर्गतिनाम, दुःस्वरनाम, अनादेय नाम

३. स्त्रीकथा, भक्तकथा, राजकथा, जीवकथा

४. अनादि, सादि, वामन, कुब्ज

५. वर्ण, गंध, रस, स्थिर

ब. निम्न गुणस्थानों में कितनी प्रकृतियों की उदीरणा होती है, लिखिए। **(५)**

१. मिश्र गुणस्थान २. प्रमत्तविरत गुणस्थान ३. क्षीणमोह गुणस्थान

४. अपूर्वकरण गुणस्थान ५. सास्वादन गुणस्थान

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. विनय मिथ्यात्व २. बालतपस्वी ३.अपूर्व स्थितिबंध ४. सत्ता

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. मिच्छे सासण मीसे अविरय देसे पमत्त अपमत्ते।
नियट्टि अनियट्टि सुहुमुवसम खीण सजोगि अजोगि गुणा।।

२. अणमज्झागिइसंघयण चउ, निउज्जोयकुखगइत्थि त्ति।
पणवीसंतो मीसे चउसयरि दुआउयअबन्धा।।

३. सत्ताकम्माण ठिई बंधाई लद्ध अत्त लाभाणं।
संते अडयालसयं जा उवसमु विजिणु बियतइए।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सयोगिकेवली गुणस्थान का स्वरूप बताइए।

२. आहारकद्विक का उदय छठे गुणस्थान में क्यों पाया जाता है?

३. केवलज्ञानी सयोगी अवस्था में जो योगों का निरोध करते हैं, उसका क्रम बताइए।

४. प्रमत्तसंयत गुणस्थान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान का स्वरूप विस्तार से बताइए।

२. सत्ता किसे कहते हैं? उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए। पहले से लेकर ग्यारहवें गुणस्थान तक सत्तायोग्य प्रकृतियों को लिखिए।

P.T.O

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग ३)

प्रश्न ५. अ. सही या गलत बताइए। (५)

१. शुक्ललेश्या पहले से तेरहवें गुणस्थान तक पायी जाती है।

२. वेद के ५ भेद हैं।

३. वैक्रिय काययोग के अधिकारी देव तथा नारक होते हैं।

४. गतित्रस के ४ भेद हैं।

५. सम्यग्दृष्टि पर्याप्तमनुष्य तीर्थंकर नामकर्म का बंध कर सकते हैं।

ब. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। (५)

नाम	बंधयोग्य प्रकृतियां	गुणस्थान
१. ९ ग्रैवेयक		
२. काययोग		
३. तेउकाय		
४. पर्याप्त मनुष्य		
५. चतुरिन्द्रिय		

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। (६)

१. लेश्या २. वेद ३. काय ४. दर्शन

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। (४)

१. बन्धविहाणविमुक्कं वंदिय सिरिवद्धमाण जिणचंदं।
गइयाईसु वुच्छं समासओ बंधसामित्तं।।

२. विणु नरयसोल सासणि सुराउ अण एगतीस विणु मीसे।
ससुराउ सयरि सम्मे बीयकसाए विणा देसे।।

३. परमुवसमि वट्टंता आउ न बंधति तेण अजयगुणे।
देवमणुआउहीणो देसाइसु पुण सुराउ विणा।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. किन्हीं ५ मार्गणा के भेदों को बताकर सामान्य रूप से किसमें कौन–से गुणस्थान होते हैं, बताइए।

२. मनःपर्यवज्ञान में कौन–से गुणस्थान होते हैं? क्यों? उन गुणस्थानों में कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है?

३. मार्गणा और गुणस्थान में क्या अंतर है बताइए।

४. ज्योतिषी देवों में तीर्थंकर नामकर्म का बंध क्यों नहीं होता है? और इन देवों में कौन–से गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है, बताइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. एकेन्द्रिय आदि में सास्वादन गुणस्थान के बन्धविषयक दोनों मतों को स्पष्ट कीजिए।

२. ७ नरकों में कौन–से गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है, स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नन्दी सूत्र)

प्रश्न १. अ. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. क्षायोपशमिक अवधिज्ञान के भेद
२. श्रुतज्ञान के भेद
३. सूत्रकृताङ्ग के अध्ययन
४. पुष्ठश्रेणिका परिकर्म के भेद
५. आत्मप्रवादपूर्व की वस्तु

ब. अवधिज्ञान के क्षेत्र के अनुसार अवधिज्ञान का काल लिखिए। **(१०)**

१. अंगुल का संख्यातवां भाग देखें
२. पृथक्त्व अंगुल
३. एक योजन
४. भरत क्षेत्र
५. रुचक द्वीप
६. एक हस्त
७. पच्चीस योजन
८. अढाई द्वीप
९. संख्यात द्वीप
१०. एक कोस

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(६)**

१. जयइ सुयाणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो।।

२. तव नियम सच्च संजम विणयज्जव खंति मद्दवरयाणं।
सीलगुणगद्दियाणं, अणुओग जुगप्पहाणाणं।

३. मणपज्जवनाणं पुण, जणमण परिचिंतियत्थपागडणं।
माणुसखित्तनिबद्धं, गुणपच्चइअं चरित्तवओ।।

४. सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निजुत्तिमीसीओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विहि होइ अणुओगे।।

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ की परिभाषा लिखिए। **(४)**

१. हीयमान अवधिज्ञान २. सम्यक् श्रुत ३. सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. संघ की स्तुति में पद्म और समुद्र की जो उपमा दी है, उसका वर्णन कीजिए।
२. वैनयिकी बुद्धि का लक्षण लिखकर उसका कोई एक उदाहरण विस्तार से समझाइए।
३. केवलज्ञान का निरूपण कीजिए।
४. श्रुतनिश्रित मतिज्ञान के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
५. सादि सपर्यवसित और अनादि अपर्यवसित श्रुत का क्या स्वरूप है?

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. नन्दी सूत्र के आधार पर श्रोताओं के कोई ७ प्रकार समझाइए।

२. दृष्टिवाद का निरूपण अपनी भाषा मे कीजिए।

(खण्ड ख – भारतीय दर्शन)

प्रश्न ५. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. कर्म और ज्ञान द्वारा ..... का उदय होता है। (मुक्ति, भक्ति, युक्ति)

२. योग दर्शन को ..... सांख्य कहते हैं (सेश्वर, निरीश्वर, ईश्वर)

३. सांख्य और योग में ..... संबंध है।(घनिष्ठ, गहरे, थोडे)

४. पूषा ..... के देवता माने गए हैं। (अग्नि, स्त्री, चारागाह)

५. मीमांसा ..... धर्म की शाखा है। (जैन, वैदिक, बौद्ध)

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. वेदांत के अध्ययन के लिए कौन-सी बातें आवश्यक है?

२. पारमार्थिक अपरोक्ष ज्ञान के भेद कितने और कौन-से?

३. यज्ञ करने में कौन-कौन-से ऋत्विजों की आवश्यकता है?

४. चित्त की वृत्तियां कितनी और कौन-सी है?

५. प्रारब्ध कर्म किसे कहते हैं?

६. त्रिपुटी ज्ञान किसे कहते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. मीमांसा मतानुसार शब्द प्रमाण को विस्तार से लिखिए।

२. वैशेषिक मतानुसार मन के अस्तित्व को सिद्ध कीजिए।

३. न्याय दर्शन के अनुसार प्रमेय क्या है; समझाइए।

४. वेदांत दर्शन का विकास कैसे हुआ?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. मायावाद पर रामानुज के कौन-कौन से आक्षेप है; स्पष्ट कीजिए।

२. अलौकिक और लौकिक प्रत्यक्ष को विस्तार से समझाइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – लघुसिद्धान्तकौमुदी)

प्रश्न क्र. १. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. विद्वाँल्लिखति	–	क. सवर्ण दीर्घ सन्धि
२. चक्रिण्ढौकसे	–	ख. परसवर्ण सन्धि
३. देवैश्वर्यम्	–	ग. विसर्ग सन्धि
४. स शम्भु	–	घ. वृद्धि सन्धि
५. दैत्यारि	–	ङ. ष्टुत्व सन्धि

प्रश्न क्र. २. निम्न प्रत्याहारों के वर्ण लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. खय्	२. झल्	३. अम्
४. जश्	५. खर्	६. चर्

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं ५ में सन्धि विधायक सूत्र का निर्देश करते हुए सन्धि कीजिए। **(१०)**

१. कृष्ण + औत्कण्ठयम्	२. होतृ + ऋकार:	३. शार्ङिन् + जयः
४. सुगण् + ईश:	५. हरे + अव	६. विष्णो + इह

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ संज्ञाओं के सूत्र अर्थ सहित लिखिए। **(१०)**

१. अनुदात्त संज्ञा	२. संयोग संज्ञा	३. संहिता संज्ञा
४. हल् संज्ञा	५. टि संज्ञा	६. वृद्धि संज्ञा

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं २ उदाहरणों की ससूत्र सिद्धि कीजिए। **(१०)**

१. धात्त्रंश:	२. अक्षौहिणी	३. सञ्शम्भु
४. पुंऽकोकिल:		

(खण्ड ख – प्राकृत व्याकरण, द्वितीय पाद तक)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

जैसे – कर्णिकार: – कण्णिआरो

१. प्रावृष्	२. गर्दभ:	३. विश्वसिति
४. पुद्गलं	५. यथाजातम्	६. आरब्ध:

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. विउसा	२. पिहडौ	३. गरुई

४. ओमालं ५. निल्लज्जिमा ६. एककारो

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों के अर्थ और उदाहरण लिखिए। **(२०)**

१. त्वस्य डिमात्तणौ वा २. गोणादय: ३. ज्ञो णत्वेऽभिज्ञादौ

४. पदयो: सन्धिर्वा ५. छोऽक्ष्यादौ ६. फो भहौ

प्रश्न क्र. ९. निम्न प्राकृत रूपों की संस्कृत में सिद्धि कीजिए। (कोई ३) **(१५)**

१. पाडिवया २. मुत्ताहलं ३. अग्गहो

४. पवत्तणं ५. मोग्गरो

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किन्हीं ३ संस्कृत रूपों की प्राकृत में सिद्धि कीजिए। **(१५)**

१. जटावान् २. स्वाध्याय: ३ उपरितन:

४. व्याकरणम् ५. अवहृतम्

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण मीमांसा)

प्रश्न १. निम्नलिखित वर्णन से ये कौनसी जाति है, पहचानिए। **(५)**

१. साधर्म्य दिखलाकर वादी के साधन का निरास करना –

२. अनुत्पत्ति दिखाकर निरास करना –

३. वर्ण्य और अवर्ण्य के द्वारा निरास करना –

४. अतिप्रसंग का आपादन करके निरास करना –

५. प्रयत्न के कार्यों का नानापन कहकर हेतु का निरास करना –

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों का हिन्दी में ससंदर्भ अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. एतावान् प्रेक्षप्रयोग:।

२. नानयोस्तात्पर्ये भेद:।

३. ऊहात् तन्निश्चय:।

४. अविशद: परोक्षम्।

५. फलमर्थप्रकाश:।

६. सम्यगर्थनिर्णय: प्रमाणम्।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के सटीक जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अनुमान प्रमाण से ज्ञान का स्वसंवेदन विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. बौद्धों ने हेतु के कितने और कौन–से लक्षण स्वीकार किये हैं? स्पष्ट कीजिए।

३. शिष्य के अनुरोध से अनुमान में कितने अवयवों का प्रयोग करना चाहिए? कौन–से? किन्हीं दो अवयवों के लक्षण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. प्रमाण किसे कहते हैं? उसके कितने और कौन–से भेद हैं? चावार्क कौन–से प्रमाण मानते हैं? क्यों? स्पष्ट कीजिए।

२. निम्न पदों पर टिप्पणी लिखिए।

अ. स्मृति ब. प्रमाण का विषय

(खण्ड ख – तत्त्वार्थसूत्र)

प्रश्न ५. निम्न प्रकृतियां कौन–से कर्म की हैं, लिखिए। **(५)**

१. प्रचला २. सम्यक्त्व ३. मतिज्ञान

४. विहायोगति ५. उपभोग

P.T.O

प्रश्न ६. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(१०)**

	पुलाक	बकुश	प्रतिसेवन कुशील	कषाय कुशील	निर्ग्रंथ	स्नातक
संयम	.....	२	.....	.....	१	.....
उत्कृष्ट श्रुत (पूर्व)	१०	.....	.....	१४	.....	परे
लेश्या	३	.....	६	.....	१	.....

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ व्रतों के अतिचार संस्कृत में लिखिए। **(१०)**

१. दूसरा व्रत २. छठ्टां व्रत ३. नववां व्रत
४. तीसरा व्रत ५. दसवां व्रत ६. ग्यारहवां व्रत

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों का ससंदर्भ अर्थ स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

१. तन्निसर्गादधिगमाद्वा। २. पूर्वयोर्द्वीन्द्राः।
३. अणवः स्कन्धाश्च। ४. परस्परोपग्रहो जीवानाम्।
५. स यथानाम। ६. परं परं सूक्ष्मम्।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. किताब के आधार पर मध्यलोक का वर्णन अपनी भाषा में कीजिए।
२. किताब के आधार पर मोहनीय कर्म के बन्धहेतुओं को विस्तार से लिखिए।

। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग ४)

प्रश्न १. अ. सही या गलत बताइए। (५)

१. विभंगज्ञान प्राप्ति की योग्यता असंज्ञी में नहीं होती है।

२. अभव्य जीवों में पहला गुणस्थान नहीं होता है।

३. तेजोलेश्या से शुक्ललेश्या वाले अनन्तगुणे माने हैं।

४. आयुकर्म की उदीरणा पहले छह गुणस्थानों में होती है।

५. आत्मा के प्रदेशों में परिस्पंदन होना उपयोग कहलाता है।

ब. निम्न मार्गणाओं में कितनी लेश्या है बताइए। (५)

१. देवगति २. केवलज्ञान ३. पृथ्वीकाय

४. वायुकाय ५. नपुंसकवेद

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। (४)

१. मणनाणचक्खुवज्जा अणहारे तिन्नी दंस चउ नाणा।
चउनाणसंजमोवसम वेयगे ओहिदंसे य।।

२. सच्चेयर मीस असच्चमोस मण वइ विउव्वियाहारा।
उरलं मीसा कम्मण इय जोगा कम्ममणहारे।।

३. नमिय जिणं जियमग्गणगुणठाणुवओगजोगलेसाओ।
बन्धऽप्पबहूभावे संखिज्जाई किमवि वुच्छं।।

ब. किन्हीं ३ मार्गणा के भेदों में जीवस्थान, गुणस्थान, उपयोग और योग कितने हैं, लिखिए। (६)

१. द्वीन्द्रिय २. स्त्रीवेद ३. श्रुतज्ञान ४. मनुष्यगति

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों का जवाब लिखिए। (१५)

१. स्त्रीवेद में आहारकद्विक क्यों नहीं माना जाता है उसे स्पष्ट कीजिए।

२. जीवस्थान किसे कहते हैं? उसके लक्षणों को बताइए।

३. असंज्ञी में कितने और कौन–से योग होते हैं और क्यों उसे स्पष्ट कीजिए।

४. गति मार्गणा कितनी हैं? उसके भेदों का स्वरूप बताइए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. केवली समुद्घात का स्वरूप बताइए।

२. एकेन्द्रिय के सूक्ष्म और बादर भेदों का स्वरूप विस्तार से बताइए।

P.T.O

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २१ से ३६)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब लिखिए। (५)

१. पालित श्रावक व्यापार कहां करता था?

२. अरिष्टनेमि का गोत्र कौनसा था?

३. केशी श्रमण कौन-से उद्यान में विराजमान थे?

४. वेदों का मुख्य क्या हैं?

५. ज्ञान, दर्शन, चारित्र रहित को क्या नहीं मिलता?

ब. निम्न प्राकृत शब्द के लिए हिन्दी शब्द लिखिए। (५)

१. वारिणा २. उवएसरुइत्ति ३. धम्मचिन्ताए

४. सायागारविए ५. पयंगवीहिया

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. भगवान अरिष्टनेमी के दीक्षा का वर्णन कीजिए।

२. भाषा संबंधी कौन-से आठ स्थान बताएं हैं?

३. आपृच्छना, प्रतिपृच्छना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

४. प्रायश्चित करने से जीव को क्या लाभ होता है?

५. अन्तराय कर्म कितने प्रकार का हैं?

६. कृष्णलेश्या के बारे में आप क्या जानते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ गाथाओं के भावार्थ को स्पष्ट कीजिए। (१५)

१. एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डी पय सणहप्पया।
हयमाइ गोणमाई, गयमाइ सीहमाइणो।।

२. छन्दणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो य सारणे।
मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए।।

३. सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्ती चउव्विहा।।

४. एग जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं।।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. पांच इन्द्रियों में आसक्त जीव की दशा का वर्णन कीजिए।

२. पांच स्थावरों के भेद, भवस्थिति, कायस्थिति को स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित अव्ययों से स्वनिर्मित वाक्य बनाइए। **(५)**

१. ऋते २. अलम् ३. निकषा
४. विना ५. स्वधा

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित धातुओं के योग में कौनसी विभक्ति आती है बताइए। **(५)**

१. ह्रुङ् २. वह् ३. जनि
४. अधि + स्था ५. राध्

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कृदन्त प्रकरण में स्थित किन प्रत्ययों की कृत्य संज्ञा होती है?
२. संबंध कितने प्रकार के होते हैं? उनमें से मुख्य कौन-से?
३. अशुत्तरपद किसे कहते हैं? उसका उदाहरण लिखिए।
४. प्रयोजक कर्ता और प्रयोज्य कर्ता किसे कहते हैं?
५. उक्त और अनुक्त किसे कहते हैं?
६. अभिधान प्राय: किससे होता है?

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. सप्तमीपञ्चम्यौ कारक मध्ये २. अन्तर्धौ येनादर्शनम्
३. उभयप्राप्तौ कर्मणि ४. नक्षत्रे च लुपि
५. सहयुक्तप्रधाने

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. द्विकर्मक धातुओं की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से होती है? क्यों? वे कितनी है? सोदाहरण लिखिए।
२. सप्तमी विधायक किन्ही तीन सूत्रों का सोदाहरण स्पष्टीकरण कीजिए।

(खण्ड ख – हेम प्राकृत व्याकरण तृतीय-चतुर्थ पाद)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। **(५)**

१. दुहिआ २. पलोट्टइ ३. अम्हेहिं
४. तिरिच्छि ५. तिअडा

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। **(५)**

१. कथयित्वा २. अपूर्वं नाटकम् ३. नश्यति

P.T.O

४. कुटिरकाणि ५. कृतकार्यः

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ क्रियाओं से प्राकृत वाक्य बनाइए। **(१०)**

१. विढवइ २. धुवइ ३. हसावेइ

४. काहीअ ५. होहित्था ६. डज्झिहिसि

प्रश्न क्र. ९. नीचे दिए किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. आत्मनष्टो णिआ णइआ २. शकादीनां द्वित्वम्

३. अजाते पुंसः ४. समनूपाद्रुधे

५. मध्यमस्येत्था हचौ

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. चूलिका पैशाची प्राकृत के लक्षण ससूत्र एवं सोदाहरण लिखिए।

२. किन्हीं ३ गाथाओं के अर्थ लिखकर रेखांकित पद में किस सूत्र से क्या परिवर्तन हुआ है लिखिए।

अ. पनमथ पनयप्पकुप्पितगोली चलन लग्ग-पतिबिम्बं।
तससु नखतप्पनेसुं एकातस तनुथलं लुद्दं।।

ब. जइ तहो तुट्टउ नेहडा मइं सहु नवि तिलतार।
तं किहे वङ्केहिं लोअणेहिं जोइज्जउं सयवार।।

क. एसी पिउ रूसेसु हउं रुट्ठी मई अणुणेइ।
पगिम्ब एइ मणोरहइं दुक्करु दइउ करेइ।।

ड. चञ्चलू जीविउ ध्रुवु मरणु पिअ रूसिज्जइ काइ।
होसइं दिअहा रूसणा दिव्वइं वरिससयाइं।।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

षड्दर्शन समुच्चय

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. सौत्रांतिकों के सिद्धांतानुसार ..... परलोक जाते हैं। (स्कंध, व्यक्ति, भिक्षु)

२. खोटे ज्ञान वाले अज्ञानिक ..... है। (यदृच्छावादी, अज्ञानवादी, अक्रियावादी)

३. कपिल का ..... भी नाम है। (परमर्षि, परमर्ष, पारमर्ष)

४. सांख्य लोग ..... में प्रचुरता से रहते हैं। (बनारस, कोलकाता, कन्याकुमारी)

५. मोह समस्त ..... का जनक है। (रागद्वेषों, विकारों, वासनाओं)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. पूर्व मीमांसक	अ. क्षणिक है।
२. चार्वाक दर्शन	ब. समवाय।
३. सभी संस्कार	क. याज्ञिक क्रियाकाण्डी।
४. सनत्कुमार आदि	ड. नास्तिक दर्शन।
५. वैशेषिक तत्त्व	इ. आप्त।

प्रश्न ३. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. शास्त्रवार्ता समुच्चय इस ग्रंथ के रचयिता कौन है?

२. जिनके प्रसाद स्तूप गोल होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

३. संसारी पांच स्कंधों को क्या कहते हैं?

४. नारक जीवों में कौन-से गुणों की प्रचुरता होती है?

५. किसके वियोग का नाम मोक्ष है?

प्रश्न ४. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. जैमिनी मत में कितने प्रमाण हैं?

२. वैशेषिक मतानुसार अविद्या के कितने भेद हैं?

३. बौद्ध दर्शन के कितने भेद हैं?

४. शैव दीक्षा कितने वर्षों तक धारण करने पर भी निर्वाण होता है?

५. भासर्वज्ञकृत न्यायसार की कितनी टिकाएं हैं?

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं पांच सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. श्वेतांबरों के ग्रंथों में से किन्हीं चार ग्रंथों के नाम लिखिए।

P.T.O

२. बौद्ध मान्य प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद लिखिए।

३. नैयायिक मान्य हेत्वाभास कितने और कौन से?

४. कौन-से कर्म घाती कर्म कहलाते हैं?

५. चैतन्य के कितने प्रकार हैं, परिभाषा सहित लिखिए।

६. वैशेषिक मतानुसार सुख-दुःख की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अन्वय दृष्टांत २. जल्प ३. आर्य और सत्य

४. बौद्धों के अनुसार सत् ५. निर्णय ६. सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. चावार्क दर्शन के मत का निरूपण संक्षेप में कीजिए।

२. मीमांसक मतानुसार उपमान प्रमाण और आगम प्रमाण को स्पष्ट कीजिए।

३. गोष्ठामाहिल ने माना हुआ कर्म बंध सही है या गलत? स्पष्ट कीजिए।

४. सांख्य दर्शन कितने तत्त्वों को मानता है, संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

५. अनुपलब्धि के भेदों को परिभाषा एवं उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

६. वेदविहीत याज्ञिक हिंसा को धर्म कहें या अधर्म स्पष्ट कीजिए।

७. संशय और प्रयोजन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. चार्वाक और जैनों द्वारा मान्य आत्मा खंडनी-मंडन के साथ स्पष्ट कीजिए।

२. निग्रहस्थान की व्याख्या लिखते हुए किन्हीं १० भेद स्पष्ट कीजिए।

३. जैन दर्शन के अनुसार तत्त्व कितने हैं और कौनसे? स्पष्ट कीजिए।

४. निम्नलिखित गाथा को स्पष्ट कीजिए।

सद्दर्शनं जिनं नत्वा, वीरं स्याद्वाददेशकम्।
सर्वदर्शनवाच्योऽर्थः, संक्षेपेण निगद्यते।।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – आचारांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कन्ध)

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. जीव हिंसा ..... हैं। (तिर्यंच, मनुष्य, नरक)

२. संपातिम अर्थात् ..... वाले प्राणी। (उडने, चलने, तैरने)

३. मुनि ..... चिकित्सा ना करें। (निर्दोष, सदोष, दोषादोष)

४. ..... के कारण धर्म नहीं जानता। (अज्ञान, मूढता, रोग)

५. काम भोग ..... उत्पन्न करने वाले हैं। (कषाय, हिंसा, असत्य)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. विमोक्ष	अ. वस्तु स्वरूप का यथार्थ बोध
२. धुत	ब. विवेक
३. सम्मत्तं	क. परित्याग करना
४. परिज्ञा	ड. संबल
५. उपधान	इ. धुला हुआ

प्रश्न ३. एक वाक्य में जवाब लिखिए। **(५)**

१. सम्यक दृष्टि जीव क्या नहीं करता?

२. किसको सब ओर से भय होता है?

३. भगवान महावीर ने कौन-से ऋतु में दीक्षा ली?

४. साधर्मिक साधु में आहार के लेनदेन के संबंध में कितने भंग हैं?

५. आचारांग सूत्र के सप्तम अध्ययन का नाम क्या है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. रसज किसे कहते हैं?

२. अरति किसे कहते हैं?

३. अहिंसा धर्म कैसा है?

४. तपस्या से क्या लाभ होता है उदाहरण सहित बताइए।

५. मन को वश में कैसे किया जाता है?

६. संलेखना कब ग्रहण की जाती है?

P.T.O

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. पणया वीरा महावीहिं।

२. जे एगं णामे से बहुं णामे।

३. आणाए मामगं धम्मं।

४. समयं लोगस्स जाणित्ता एत्थ सत्थोवरए।

५. लाभो त्ति न मज्जेज्जा।

६. अणण्ण परमं णाणी णो पमाए कयाइ वि।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. भिक्षु के लिए कालज्ञ आदि दिए हुए विशेषणों को स्पष्ट कीजिए।

२. दीर्घलोक शस्त्र अग्नि है या वनस्पति स्पष्ट कीजिए।

३. निष्कामदर्शी ज्ञानी पुरुष कितने गुणों से युक्त होता है स्पष्ट कीजिए।

४. संशय को ज्ञान का कारण क्यों कहा है?

५. साधक के कितने प्रकार बताए हैं?

६. मोहग्रस्त जीव की दशा का उदाहरण के साथ वर्णन कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. आस्रव और परिस्रव के स्थानों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. अचेलक और गुरुकुल में रहने वाले मुनि की साधना को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – राजप्रश्नीय सूत्र)

प्रश्न ८. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. राजा प्रदेशी के पुत्र का नाम सूर्यकांत राजा था।

२. श्रावस्ती नगरी के राजा चित्त सारथी थे।

३. मन को एकाग्र करना अधिगम है।

४. एकेन्द्रिय जीव में पांच पर्याप्ति है।

५. करण के सतर भेद हैं।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. रमणीय पदार्थ अरमणीय कैसे बनते हैं? उदाहरण देकर बताइए।

२. सूर्याभदेव ने किसके साथ में जंबूद्वीप के दर्शन किए? कैसे?

३. व्यवहार कर्ता कितने हैं और कौन–से?

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. नारकी और देवता के जीव मनुष्य लोक में आते हैं या नहीं? सकारण लिखिए।

२. केशी श्रमण और राजा प्रदेशी के बीच हुई चर्चा को संक्षेप में बताइए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **तृतीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

स्याद्वादमंजिरी

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में लिखिए। **(५)**

१. अनंत विज्ञान विशेषण किस मत का निराकरण करने के लिए लिया है?
२. कौन दूसरे लोगों के अभिप्राय को समझने में असमर्थ है?
३. समवाय को एक, नित्य और सर्वव्यापक कौन मानते हैं?
४. अर्हत् दीक्षा के समय किनको नमस्कार करते हैं?
५. अद्वैतवादी किसको सत्पदार्थ स्वीकार करते हैं?

प्रश्न क्र. २. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. अनुमान प्रमाण से आत्मा की सिद्धि के लिए कितने हेतु दिए हैं?
२. जैन सिद्धांतों में अतिशयों की संख्या कितनी है?
३. शून्यवादी के मत में कितने तत्त्व अवस्तु है?
४. स्याद्वाद में कितने दोष बताए गए हैं?
५. ज्ञानोपयोग कितने प्रकार का है?

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है वह सत् है।
२. 'सूपपादं' का अर्थ है सुख से प्राप्त करने योग्य।
३. वैशेषिकों ने आत्मा का एकत्व स्वीकार किया है।
४. पदार्थ स्वभाव से ही सामान्य विशेष रूप है।
५. प्रत्यक्ष सन्मात्र का ग्राहक है।

प्रश्न क्र. ४. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. सामान्य और अपवाद वाक्य एक ही ..... के द्योतक होने चाहिए। (कर्तव्य, भाव, समता)
२. अर्थ, अभिधान और ..... ये पर्यायवाची शब्द है। (नाम, स्थापना, प्रत्यय)
३. न्याय, वैशेषिक ..... नय को स्वीकार करते हैं।(व्यवहार, नैगम, संग्रह)
४. विकलादेश ..... के आधीन होता है। (प्रमाण, नय, निक्षेप)
५. स्ववशत्व का अर्थ ..... है। (स्वातंत्र्य, पारतंत्र्य, मुक्ति)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. व्यावृत्ति २. परिणाम ३. उपाधि
४. शब्द ५. विवाद ६. गौण

P.T.O

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. गुण और पर्याययुक्त वस्तु कितने द्रव्यों में विभक्त की जाती है, कौन-से?

२. वैशेषिकों ने कितने पदार्थों को तत्त्व रूप से स्वीकार किया है?

३. माया शब्द से किस-किसका सूचन किया गया है?

४. कितने नय अर्थ का निरूपण करते हैं, कौन-से?

५. क्षायोपशमिक ज्ञान कितने हैं और कौन-से?

६. प्रलय विज्ञान के भेद कितने हैं और कौन-से?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों का सयुक्तिक जवाब लिखिए। **(३०)**

१. नैयायिकों के प्रमेय पदार्थ का स्वरूप बताते हुए जैन दर्शन सम्मत प्रमेय का लक्षण क्या है? लिखिए।

२. चार्वाक दर्शन अनुमान प्रमाण किस रूप में स्वीकार करता है, सयुक्तिक लिखिए।

३. प्रमाण का फल प्रमाण से भिन्न है या अभिन्न? अपनी भाषा मे लिखिए।

४. अर्थक्रिया किसे कहते हैं, और वह किसमें होती है? सिद्ध कीजिए।

५. शब्द पुदगल की पर्याय है या नहीं सयुक्तिक लिखिए।

६. धर्म और धर्मी भिन्न है या अभिन्न? सयुक्तिक लिखिए।

७. असत्यामृषा भाषाओं का स्वरूप सोदाहरण लिखिए।

८. सर्वज्ञ की सयुक्तिक सिद्धि कीजिए।

प्रश्न क्र. ८.निम्नलिखित किसी १ दर्शन की मान्यता अपने शब्दों में लिखिए। **(१५)**

१. सांख्यदर्शन २. मीमांसादर्शन

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सप्तभंगी का स्वरूप लिखते हुए उसमें बताए गए आठ दोषों का अपनी भाषा में परिहार कीजिए।

२. पदार्थ नित्य है या अनित्य? जैन दर्शन के अनुसार सिद्ध कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **तृतीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

(खण्ड क – जैन तत्त्व प्रकाश)

प्रश्न १. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. देवों की उत्पत्ति ..... शय्या में होती है।

२. ..... अतिशय जन्म से होते हैं।

३. शरीर पर पीठी लगाना ..... अनाचार है।

४. शतपाक आदि तेल, चूर्ण, गोली आदि से बनी हुई दवा ..... है।

५. क्रोध आदि कषायों का त्याग करना ..... संलेखना है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. नन्दीश्वर द्वीप में देवता अष्टान्हिका महोत्सव कब करते हैं?

२. द्रव्य ऊनोदरी क्या है?

३. आज्ञा व्यवहार किसे कहते हैं?

४. उपेक्षा संयम किसे कहते हैं?

५. द्रव्य निक्षेप किसे कहते हैं?

६. ऋजुमति और विपुलमति ज्ञान में कितना अन्तर है?

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (१०)

१. आचार विनय की व्याख्या और भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. स्नातक निर्ग्रन्थों की व्याख्या और भेदों को स्पष्ट कीजिए।

३. कायोत्सर्ग के आगारों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. प्रायश्चित्त का स्वरूप और भेदों को विस्तार से लिखिए।

२. सद् वक्ता के किन्हीं १५ गुणों को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली – भाग १)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब दीजिए। (५)

१. नवकार मंत्र के अंतिम चार पद किसके सूचक हैं?

२. इन्द्रियों के विषय किसके समान है?

३. तिलोक ऋषिजी म.सा. के गुरु का नाम क्या था?

P.T.O

४. अस्मितादर्श साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष कौन रहे?

५. नीरज जैन किस भाषा में कविताएं बनाते थे?

ब. जैसे जैन परंपरा में आगम है वैसे किस परंपरा में क्या है, लिखिए। **(५)**

१. पारसी परम्परा २. बौद्ध परम्परा ३. इस्लाम परम्परा

४. ईसाई परम्परा ५. वैदिक परम्परा

प्रश्न ६. शब्द समूह में से अलग शब्द को पहचानिए। **(५)**

१. मुनि, अणगार, भिक्षु, समणोवासग

२. जे. कृष्णमूर्ती, जिनेन्द्रवर्णी, रजनीश, स्वामी सत्यभक्त

३. व्यक्तित्व, धर्मत्व, नेतृत्त्व, कर्तृत्व

४. उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, अनंगप्रविष्ट

५. डाइनिंगरुम, ड्राइंगरूम, बेडरूम, प्रेयररूम

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. मन्त्र जप करते समय कौन-कौन-से कर्म निषिद्ध है?

२. तिलोकऋषिजी म.सा. ने कौन-कौन-से वैरागी बताये हैं?

३. राजप्रश्नीय सूत्र में कौन-कौन-से आचार्यों का उल्लेख मिलता है?

४. किस गति में कौनसी कषाय अधिक रहती है?

५. भावदीपिका में कषाय का क्या स्वरूप है?

६. धर्म का वर्गीकरण कितने भागों में किया जाता है?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ पर टिप्पणी लिखिए। **(१०)**

१. प्रदेशबंध २. निवर्तक धर्म के मन्तव्य और आचार

३. सामायिक में कालशुद्धि

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. शिक्षा के लिए बाधक तत्त्व कौन-कौन-से हैं?

२. सांभोगिक, असांभोगिक साधु का परस्पर व्यवहार कैसे रहता है?

३. जैन संस्कृति का अन्य सम्प्रदाय पर क्या प्रभाव पडा?

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अहिंसा अमृत है इसे अपने शब्दों में लिखिए।

२. संवर तत्त्व को विस्तार से समझाइए।

॥ ॐ अर्हम्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **तृतीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – वद्धमान चरियं)

प्रश्न क्र. १. भगवान महावीर के पारिवारिक सदस्यों के नाम लिखिए। **(५)**

१. चाचा २. दोहित्री ३. भाई ४. पुत्री ५. माता

प्रश्न क्र. २. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. भगवान महावीर स्वामी ने उम्र की कितवें वर्ष में दीक्षा ली?

२. भगवान महावीर स्वामी को कितनी उपमाएँ दी गई हैं?

३. त्रिशला माता ने स्वप्न में देखे हाथी को कितने दांत थे?

४. भगवान महावीर स्वामी को जन्म से कितने ज्ञान थे?

५. स्वप्नशास्त्र में कितने महास्वप्न बताए गए हैं?

प्रश्न क्र. ३. नीचे लिखे परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। **(५)**

तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेंति, तइए दिवसे चंद-सूरस्स दंसणियं करेंति, छट्ठे दिवसे धम्म-जागरियं जागरेंति एक्कारसमे दिवसे विइक्कंते णिव्वत्तिए असुइ-जात-जम्म-कम्म-करणे संपत्ते, बारसह-दिवसे विउलं असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडाविंति, उवक्खडावित्ता, मित्त-णाइ-णियग-सयण संबंधि-परिजणं णायए य खत्तिए य आमंतेइ, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हायाकय- बलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्ध-पावेसाइं मंगल्लाइं (पवराइं) वत्थाइं पवर-परिहिया, अप्पमहग्घाभरणालंकिय- सरीरा भोयण-वेलाए भोयण मंडवंसि सुहासण-वरगया तेणं मित्त-णाइ-णियग-सयण संबंधि-परिजणेणं णायएहिं खत्तिएहिं य सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा (एवं वा) विहरति।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१०)**

१. णिहाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वोसिज्जमणगारे।
अह गामकंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा।।

२. अकसाई विगयगेही य, सद्दरूवेसु अमुच्छिए झाइ।
छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो पमायं सइं पि कुव्वित्था।।

३. सयणेहिं वितिमिस्सेहिं, इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय।
सागारियं ण सेवेइ य, से सयं पवेसिया झाइ।।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. स्वप्न शास्त्रियों ने स्वप्न का फल क्या कहा था, विस्तार से लिखिए।

२. 'उवहाण सुयं' के प्रथम उद्देश्यक का सार अपने शब्दों में लिखिए।

P.T.O

(खण्ड ख – संस्कृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ६. किसी १ विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) (१५)

१. संस्कृतभाषायाः प्राचीनता

२. सम्यग्ज्ञानस्य महत्त्वम्

३. परोपकारः

प्रश्न क्र. ७. सूचना –निम्नलिखितं परिच्छेदं पठित्वा सूचनानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। (१५)

अहमस्मि अपाला, अत्रिमहर्षेः पुत्री, देवराजेन्द्रस्य पत्नी। इदानीमहं पुत्रपौत्रादिभिः सह वसन्ती सुखमयं समृद्धं सफलं गार्हस्थ्यजीवनं यापयन्ती गृहिणी अस्मि, किन्तु एतं साफल्यस्तरं प्राप्तुं मया कीदृशानि कष्टानि सम्मुखीकृतानि, कीदृशः सघर्षः कृतः इति किं भवन्तः जानन्ति? न खलु? एतत् ज्ञातं चेत् बहवः स्वजीवने धैर्यं बलं च प्राप्नुयुः इति उद्देशेन मम कथामत्र श्रावयामि अहम्।

मम मातापितरौ मां महता वात्सल्येन पोषितवन्तौ। उचितस्य विद्याभ्यासस्य निमित्तं व्यवस्थां कृतवन्तौ च। यदाहं प्राप्तवयस्का जाता तदा तौ योग्यं कुलीनं वरमन्विष्य मम विवाहमपि निर्वर्तितवन्तौ। मम पतिः मयि नितरामनुरागवानासीत्। अहोरात्रं मम सौन्दर्यस्य प्रशंसां कुर्वन् सः सर्वदा मुखरितः भवति स्म।

गच्छता कालेन कदाचित् रात्रौ मम स्कन्धे एकं कृष्णवर्णीयं चिह्नं दृष्टवान् सः। एतत् दृष्ट्वा सः कुतूहलेन पृष्टवान् प्रिये! एतत् स्कन्धे दृश्यमानं कृष्णवर्णीयं चिह्नं किं जन्मजातम् उत?

न जन्मजातं तत्। केभ्यश्चित् दिनेभ्यः पूर्वं मया तस्य स्थितिः लक्षिता, किन्तु तत् चिं मयि अल्पामपि पीडां तु न जनयति।

तत् पीडां न जनयति त्वाम्? इति पृच्छन् सः नखैः कृष्णवर्णयुक्तं तत् स्थलं चुटन् पृष्टवान् – इदानीम्? इति।

इदानीम् अपि नास्ति पीडा इति हसन्ती उक्तवती अहम्। नखैः तीव्रं चुटन् सः पुनः पृष्टवान् इदानीम्? इति। इदानीम् अपि नास्ति पीडा मम। मम पतिः सूच्या विध्यन् पुनः पृष्टवान् इदानीम्?

इदानीम् अपि नास्ति पीडा ममैतेन सिद्धं खलु यत् अहं वीराङ्गना इति? इति मन्दहासपूर्वकं पृष्टवती अहम्। किन्तु मम पत्युः प्रतिस्पन्दः नितरां गम्भीरा चिन्तापूर्णा च आसीत्।

'किं प्रवृत्तम् आर्य? किमर्थम् अकस्मात् चिन्तागर्ते पतितः इव परिलक्ष्यते भवान्? किं सञ्जातम्?' – आतङ्कमिश्रितेन स्वरेण पृष्टवती अहम्, किन्तु प्रतिवचनं किमपि अदत्त्वा मुखं परिवृत्त्य शयनं कृतवान् सः। अनन्तरदिने प्रातःकाले राजवैद्यः आनायितः तेन। राजवैद्यः मां परीक्ष्य निर्णयं श्रावितवान् यत् कृष्णवर्णीयं यत् चिह्नं कुष्ठरोगसम्बद्धम् इति।

एतज्ज्ञात्वा मम पतिः कठोरस्वरेण माम् उक्तवान् – मम सन्देहः यथावत् जातः। इतः परमेकं क्षणमपि अत्र स्थातुं न अर्हति भवती। सेवकाः भवतीं प्रापयिष्यन्ति। इदानीम् एव निर्गच्छतु भवती इति।

अहमेतादृशं वज्रपातसदृशमघातं सोढुम् अशक्नुवती अश्रुधारां स्रावयन्ती तस्य पादौ गृहीत्वा रुदितवती – नैव! नैव गच्छामि इतः। मा आज्ञापयतु तथा। भवन्तं विहाय अहं कुत्र गच्छेयम्? इति। सः मां पादेनैव निवार्य निर्दयतापूर्वकम् उक्तवान् – गच्छतु भवती पितुः गृहम्। एषः महारोगः यतः आनीतः तत्र गमनमेव समुचितम् इदानीम्। भवत्याः गृहस्य जनाः मां वञ्चितवन्तः। भवती अपि तत्र सहभागिनी आसीत्।

P.T.O

सूचना – व्याकरणानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। (५)

१. निवार्य अस्मिन् पदे कः उपसर्गः, कः धातुः, कः प्रत्ययः च अस्ति?

२. केभ्यश्चित् दिनेभ्यः अनयोः पदयोः का विभक्तिः अस्ति?

३. सूच्या अस्मिन् पदे मूलशब्दः कः, तस्य लिङ्गं च किम्?

४. मातापितरौ अस्मिन् पदे कः समासः अस्ति?

५. रुदितवती एतत् पदं केन प्रत्ययेन निर्मितं?

सूचना – सन्धि–विच्छेदः कुर्युः। (५)

१. नितरामनुरागवानासीत् २. देवराजेन्द्रस्य ३. एतज्ज्ञात्वा

४. मां परीक्ष्य ५. पादेनैव

सूचना – निम्नलिखित प्रश्नानां उत्तराणि लिखेयुः। (५)

१. अपालायाः मातापितरौ तां कथं पोषितवन्तौ?

२. केन उद्देशेन अपाला अत्र कथां श्रावयति?

३. कृष्णवर्णीयं चिह्नं केन रोगेन सम्बन्धितं?

४. अपालायाः भर्ता कः आसीत्?

५. अपाला कस्य पुत्री आसीत्?

(खण्ड ग – प्राकृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ८. किसी १ विषय पर प्राकृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) (१५)

१. समत्तदंसी ण करेइ पावं

२. पढमं णाणं तओ दया

३. सच्चं खु भगवं

प्रश्न क्र.९. सूयणा – अहोलिहिअं निबन्धं पढिऊण पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। (१५)

झाणे चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–१. अट्टज्झाणे, २. रुद्दज्झाणे, ३. धम्मज्झाणे, ४. सुक्कज्झाणे।

अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा– १. अमणुण्ण संपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागए यावि भवइ, २.मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सतिसमण्णागए यावि भवइ, ३. आयंक संपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागए यावि भवइ, ४. परिजूसिय–कामभोग–संपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमण्णागए यावि भवइ।

अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता। तं जहा–१. कंदणया २. सोयणया ३.तिप्पणया, ४. विलवणया।

रुद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा– १. हिंसाणुबंधी २. मोसाणुबंधी ३.तेणाणुबंधी ४. संरक्खणाणुबंधी।

रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता तं जहा– १. उसण्णदोसे २. बहुदोसे ३. अण्णाणदोसे ४. आमरणंतदोसे।

धम्मज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते तं जहा १. आणाविजए २. अवायविजए ३. विवागविजए ४. संठाणविजए।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता तं जहा– १. आणारुई २. णिसग्गरुई ३. उवएसरुई ४. सुत्तरुई।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता तं जहा – १. वायणा २. पुच्छणा ३. परियट्टणा ४. धम्मकहा।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ तं जहा– १. अणिच्चाणुप्पेहा २. असरणाणुप्पेहा

P.T.O

३.एगत्ताणुप्पेहा ४.संसाराणुप्पेहा।

सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते। तं जहा १.पुहुत्तवियक्के सवियारी २. एगत्तवियक्के अवियारी ३. सुहुम –किरिए अप्पडिवाई ४. समुच्छिन्नकिरिए अणियट्टी।

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता तं जहा– १. विवेगे २. विउस्सग्गे ३. अव्वहे ४. असम्मोहे।

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता तं जहा– १. खंती २. मुत्ती ३. अज्जवे ४. मद्दवे।

सुक्कस्स झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ तं जहा– १. अवायाणुप्पेहा २. असुभाणुप्पेहा ३. अणंतवत्तियाणुप्पेहा ४. विपरिणामाणुप्पेहा। से तं झाणे।

सूयणा – एगे सद्दे पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(५)**

१. विपरिणामाणुप्पेहा कस्स झाणस्स अणुप्पेहा अत्थि?

२. अण्णाणदोसे कस्स झाणस्स लक्खणो अत्थि?

३. परियट्टणा कस्स झाणस्स आलंबणा अत्थि?

४. सुक्कज्झाणस्स कइ आलंबणा पण्णत्ता?

५. रुद्दज्झाणस्स कइ लक्खणा पण्णत्ता?

सूयणा – कस्स कस्स झाणस्स अणुप्पेहाओ सन्ति, ताओ काओ? लिहउ। **(५)**

सूयणा – इमाण कए पाइयभासाए को सद्दो अत्थि निबंधाओ चिणिऊण लिहउ। **(५)**

१. जोर से रोना २. संरक्षण ३. आकार

४. सूक्ष्म ५. क्षमा

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

प्रज्ञापना सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्न स्थिति का तक्ता पूर्ण कीजिए। **(१०)**

	जघन्य	उत्कृष्ट
१. पर्याप्तक भवनवासी देवी		
२. नागकुमार देव		
३. पर्याप्त जलचर		
४. ताराविमान में पर्याप्त देव		
५. पंकप्रभापृथ्वी के नैरयिक		

ब. अल्पबहुत्व के अनुसार निम्न जीवों को क्रम से लिखकर उनका अल्पबहुत्व लिखिए। **(१०)**

१. सेन्द्रिय	२. चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक	३. त्रीन्द्रिय पर्याप्तक
४. द्वीन्द्रिय पर्याप्तक	५. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक	६. पंचेन्द्रिय पर्याप्तक
७. सेन्द्रिय अपर्याप्तक	८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक	९. एकेन्द्रिय अपर्याप्तक
१०. पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक		

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. दर्शनावरणीय कर्म	२. संघात नामकर्म	३. योनि
४. आर्य	५. भाषा चरम	६. सादि संस्थान

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कृष्ण लेश्या आस्वाद में कैसी है?
२. नील लेश्या वर्ण से कैसी है?
३. कापोत लेश्या आस्वाद में कैसी है?
४. तेजो लेश्या वर्ण से कैसी है?
५. पद्म लेश्या आस्वाद में कैसी है?
६. शुक्ल लेश्या वर्ण से कैसी है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. समुच्चय में सकायिक, अकायिक, षट्कायिक पर्याप्त-अपर्याप्त जीवों का अल्पबहुत्व स्पष्ट कीजिए।
२. योनिपद का सार अपनी भाषा में लिखिए।
३. संयतपद का सार अपनी भाषा में लिखिए।
४. चार प्रकार की भाषा के भाषक आराधक है या विराधक? इन भाषकों में अल्पबहुत्व की यथार्थता

P.T.O

समझाइए।

५. निम्न द्वारों के आधार पर आहार का प्ररूपण कीजिए।

अ. दृष्टि द्वार ब. योग द्वार

६. इन्द्रियपद के आधार पर निम्न द्वारों का प्ररूपण कीजिए।

अ. स्पृष्ट ब. प्रविष्ट क. परिमाण

७. अन्तक्रिया पद के आधार पर उद्‌वृत्तद्वार का सार लिखिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं २ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. नैरयिकों के कितने पर्याय कहे गए हैं ? क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

२. संज्ञा के भेदों का निरूपण करके चार गति में संज्ञा का अल्पबहुत्व लिखिए।

३. जीवपरिणाम के भेदों को समझाकर असुरकुमार देवों में उन परिणामों का निरूपण कीजिए।

४. घातिकर्मों की मूल तथा उत्तरप्रकृतियों की जघन्य स्थिति, उत्कृष्ट स्थिति तथा अबाधाकाल का निरूपण कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – योगदर्शन तथा योगविंशिका)

प्रश्न १. अ. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. सर्वप्रथम आगमों की संस्कृत टीका लिखने वाले ..... है। (हरिभद्र, यशोविजय)

२. दर्शनकारों का आखिरी उद्देश्य रहा ..... है। (स्वर्ग, मोक्ष)

३. हाता ..... से छुटकारा पानेवाले द्रष्टा का नाम है। (दु:ख, सुख)

४. धार्मिक कलह में ..... को लोक भूल जाते हैं। (साध्य, साधन)

५. जैन शास्त्र ..... को चित्तशुद्धि का साधन नहीं मानता। (मैत्रीभावना, प्राणायाम)

ब. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. व्यावहारिक योग	अ. मोक्ष
२. चरमपुद्गल परावर्त परिमाण	ब. कर्मयोग
३. कामशास्त्र का उद्देश्य	क. एकाग्रता का संबंध
४. उर्ण	ड. अनालम्बन योग
५. असङ्गानुष्ठान	इ. अपुनर्बंधक

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. हरिभद्रसूरी द्वारा रचित चार ग्रंथों के नाम लिखिए।

२. असफलता और नैराश्य का कारण क्या हैं?

३. आर्यजाति का लक्षण क्या है?

४. किस विषय में योगशास्त्र और जैनदर्शन का सादृश्य है?

५. वैराग्य के भेद बताकर उनकी व्याख्या लिखिए।

६. समाधि प्रज्ञा किसके बल से कहाँ प्रकट होती है?

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों के ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१५)**

१. पूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात्।

२. अतीतमागतं स्वरूपतोऽस्त्यध्वभेदाद्धर्माणम्।

३. मुक्खेण जोयणाओ जोगो सव्वो वि धम्मवावारो।
परिसुद्धो विन्नेओ, ठाणाइगओ विसेसेणं।।

४. एवं ठियम्मि तत्ते, नाएण उ जोयणा इमा पयडा।
चिइवंदणेण नेया, नवरं तत्तण्णुणा सम्मं।।

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. योगदर्शन के तीसरे पाद का वर्णन कीजिए।

२. योग के पाँच भेदों का वर्णन कीजिए।

(खण्ड ख – ध्यानशतक)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत, बताइए। **(५)**

१. ध्यान चित्त की एकाग्रता है।

२. वैदिक साहित्य में योग का अर्थ क्रिया है।

३. यतना शब्द में 'यम्' धातु का प्रयोग किया गया।

४. बौद्ध साहित्य में अन्तिम चार अरूप ध्यान हैं।

५. मृषावाद का त्याग चतुर्थ महाव्रत है।

ब. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. रौद्रध्यानी किसमें प्रसन्न रहता हैं?

२. पवन के तीव्र वेग से क्या विलीन हो जाते हैं?

३. धरती पर रहें कीचड का कौन शोषण करता है?

४. शुक्ल ध्यान के कौन–से प्रकार में काययोग ही रहता है?

५. छद्मस्थ का ध्यान कितने मिनिट का होता है?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. धर्मध्यान का विवेचन कितने विभागों में किया है

२. 'भोगी भमइ संसारे' इस सुक्ति को स्पष्ट कीजिए।

३. उपदेश का अर्थ बताते हुए उसके भेद कितने हैं?

४. जिनमत के प्रधान आलम्बन कौन–कौन–से हैं?

५. अनंतत्त्व कितने प्रकार के हैं कौन–कौन–से?

६. पाली साहित्य के अनुसार ध्यान के प्रकार लिखिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब दीजिए। **(१५)**

१. आर्तध्यान के लक्षणों को सविस्तर स्पष्ट कीजिए।

२. पृथक्त्व विर्तक सविचार शुक्लध्यान को स्पष्ट कीजिए।

३. जैन साधना में ध्यान क्या महत्व रखता है?

४. वैदिक, जैन एवं बौद्ध साहित्य में योग को कहां जोडा हैं?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. रौद्रध्यान के भेदों को समझाइए।

२. संस्थान विचय के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

सूत्रकृतांग सूत्र

प्रश्न १. अ. जैन और सांख्य मत के अनुसार निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(५)**

जैन	**सांख्य**
१. अनेकान्तवादी	.....
२.	आत्मा सर्वव्यापी
३. आत्मा कथञ्चित नित्य, कथञ्चित अनित्य	.....
४.	संसार नित्य स्वरूप
५. केवलज्ञान से मोक्ष	.....

ब. निम्न अध्ययन का वर्ण्य विषय एक वाक्य में लिखिए। **(६)**

१. वैतालिय अध्ययन प्रथत उद्देशक
२. उपसर्ग अध्ययन द्वितीय उद्देशक
३. कुशील परिभाषित अध्ययन
४. धर्म अध्ययन
५. समाधि अध्ययन
६. नालन्दकीय अध्ययन

क. निम्न कौन–कौन–से सूत्र मोक्षयात्री भिक्षु के आचारण सूत्र है, पहचानकर लिखिए। **(५)**

१. सर्वज्ञोक्त अनुशासन को सुने।
२. सर्वत्र मत्सर सहित होकर रहे।
३. अशुद्ध भिक्षाचर्या करे।
४. धर्म से ही अपना प्रयोजन रखे।
५. सदैव यत्नशील रहे।
६. तीन गुप्तियों से अयुक्त होकर रहे।
७. परमायत–मोक्षरूप लक्ष्य में दृढ रहे।

ड. निम्न वादियों के कितने भेद हैं, लिखिए। **(४)**

१. क्रियावादी २. अक्रियावादी ३. अज्ञानवादी
४. विनयवादी

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. संति पंच महब्भूया, इहमेगेसिमाहिया।
पुढवी आऊ तेऊ वा, वाऊ आगसपंचमा।।

२. ओए सदा ण रज्जेज्जा, भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा।

P.T.O

भोग समणाण सुणेहा, जह भुंजंति भिक्खुणो एगे।।

३. मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो।
आरतो परतो यावि, दुहा वि य असंजता।।

४. खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंतणाणी य अणंतदंसी।
जसंसियो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेही।।

५. लोयं विजाणंतिह केवलेणं, पुण्णेण णाणेण समाहिजुत्ता।
धम्मं समत्तं च कहेंति जे उ, तारेंति अप्पाण परं च तिण्णा।।

६. णत्थि वेयणा निज्जरा वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि वेयणा निज्जरा वा, एवं सण्णं निवेसए।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. पापकर्म से विरत होने के बोध सूत्र कौन-से हैं?

२. कौन-सा व्यक्ति पश्चाताप करता है और कौन-सा नहीं?

३. विनयवादी का क्या स्वरूप है?

४. कुशील साधक की आचारभ्रष्टता का निरूपण किजिए।

५. आहार के भेद-प्रभेद लिखिए।

६. गोशालक द्वारा पर-निन्दा आक्षेप कौनसा था?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. अवतारवाद की मान्यता को विस्तार से समझाइए।

२. नरक के दु:खों से बचने के लिए कौन-कौन-से उपाय है?

३. भावसमाधि से दूर लोगों के विविध चित्र का निरूपण कीजिए।

४. एषणासमिति का पालन करते हुए साधक पांच महाव्रतों का पालन कैसे करते हैं?

५. पौण्डरिक अध्ययन में चतुर्थ पुरुष की मान्यता पर प्रकाश डालिए।

६. हिंसादण्डप्रत्ययिक और माया प्रत्ययिक क्रियास्थान के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

७. अनाचारश्रुत अध्ययन के आधार पर जीव और अजीव के विषय में पंचमहाभूतवादी की मान्यता का निराकरण कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. 'पर्वतश्रेष्ठ सुमेरु के समान गुणों में सर्वश्रेष्ठ भगवान महावीर है' इस युक्ति को तुलनात्मक माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

२. लोकोत्तर धर्म के कतिपय आचारसूत्र का निरूपण कीजिए।

३. कुसाधु के कुशील और सुसाधु के सुशील का यथातथ्य निरूपण कीजिए।

४. प्रत्याख्यान क्रिया अध्ययन का सार विस्तार से अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **प्रथम खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

शास्त्रवार्ता समुच्चय

प्रश्न क्र. १. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. मुक्त आत्माओं का निवास स्थान कितने लोकों के ऊपर अवस्थित है?
२. जैन परम्परा में कितने कारण मोक्ष के लिए अनिवार्य माने हैं?
३. मीमांसकों ने प्रमाणों को कितने प्रकार का माना है?
४. भूत कितने धर्मों के स्वभाव वाले हैं?
५. कल्प में कितने वर्ष होते हैं?

प्रश्न क्र. २. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. वस्तुस्थिति वश भी प्रतिभाजन्य ज्ञान किसके विरुद्ध नहीं हो सकता?
२. कार्यों की उत्पत्ति में मुख्य रूप उत्तरदायी तत्त्व प्राणियों का क्या है?
३. मालतीपुष्प की गंध से परिचित भौरा किसमें रमण नहीं करता?
४. अपने द्वारा अपने को जानना किसका स्वभाव है?
५. प्रत्यभिज्ञा किसका भेद है?

प्रश्न क्र. ३. समूह में से अनुचित क्या है, लिखिए। **(५)**

१. अ. आलम्बन प्रत्यय	ब. सहकारि प्रत्यय	क. अधिपति प्रत्यय	ड. संबंध प्रत्यय
२. अ. ज्ञान	ब. सम्यक्त्व	क. तत्त्ववेदन	ड. सुखारंभ
३. अ. संशय	ब. स्वरूपानिश्चय	क. संदेह	ड. उभय
४. अ. जन्म	ब. सुख	क. बुढापा	ड. व्याधि
५. अ. उत्पाद	ब. व्यय	क. नाश	ड. ध्रौव्य

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. क्षणिक वाद की सिद्धि भी विकल्पात्मक ज्ञान की सहायता से ही संभव है।
२. सबकी सामर्थ्य प्रत्येक की सामर्थ्य के बिना संभव नहीं।
३. कारण द्वारा जनित होना कार्य का स्वभाव है।
४. कारण का स्वभाव कार्य से जन्म पाना है।
५. एक नित्य पदार्थ को सामान्य कहते हैं।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अगम्यगमन	२. वासनाजागृति	३. स्याद्वाद
४. ज्ञानयोग	५. जीव	६. रूप

P.T.O

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्ही ५ सवालों के संक्षेप में जवाब दीजिए। **(१०)**

१. वस्तु जगत् में कितने प्रकार की वस्तुओं का समावेश है? कौन-सी?

२. वस्तु स्वरूप के स्थायिता के पहलु कितने और कौन-से?

३. कितनी बातों के बीच पौर्वापर्य संबंध हुआ करता है? कौन-सी?

४. कितने गोरसों का ग्रंथ में वर्णन आया है और कौन-कौन-से?

५. जीव, अजीव वास्तविक अर्थ में किस-किससे संपन्न है?

६. 'अन्वय' और 'व्यतिरेक' को और क्या कहा जाता है?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. प्रत्यभिज्ञा द्वारा वस्तु भेद, अभेद दोनों धर्मों से कैसे सम्पन्न है, सिद्ध कीजिए।

२. मैं विषयक प्रत्यक्ष अनुभव से आत्मा की सिद्धि कैसे होती है; सिद्ध कीजिए।

३. 'द्रव्य' और 'पर्याय' भिन्न है या अभिन्न ग्रंथ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

४. दर्शन मोक्ष का बीज कैसे है? अपनी भाषा में लिखिए।

५. अर्थक्रियाकारित्व का स्वरूप अपनी भाषा में लिखिए।

६. 'विज्ञान एक स्वसंवेद्य वस्तु है' इसे सिद्ध कीजिए।

७. क्षणिकवाद का स्वरूप अपने शब्दों में लिखिए।

८. ईश्वर जगत्कर्ता है या नहीं, सिद्ध कीजिए।

प्रश्न क्र. ८. किसी १ सवाल का सटीक जबाब लिखिए। **(१५)**

१. भाव अभाव क्यों नहीं बन सकता? सयुक्तिक सिद्ध कीजिए।

२. स्याद्वाद से पदार्थ नित्य है या अनित्य? सयुक्तिक सिद्ध कीजिए।

प्रश्न क्र. ९. किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. दसवें स्तबक में वर्णित विषय का सार स्वभाषा में लिखिए।

२. द्वितीय स्तबक का सार अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

अनुयोगद्वार सूत्र

प्रश्न १. निम्न सूत्र का कौनसा दोष है, लिखिए। (५)

१. पाप व्यापारपोषक
२. जीवों के घात का प्ररूपण करना
३. विभक्ति की विपरीतता होना
४. अनुचित स्थान पर विराम लेना
५. स्वसिद्धान्त से विरुद्ध प्रतिपादन करना

प्रश्न २. निम्नलिखित समूह में से भिन्न शब्द को पहचानकर लिखिए। (५)

१. वीररस, हास्यरस, अशांतरस, कारुण्यरस
२. आवश्यक, साधना, ध्रुवनिग्रह, विशोधि
३. सत्पदप्ररूपणा, स्पर्शना, समवतार, भाग
४. षड्जग्राम, मध्यमग्राम, गांधारग्राम, ऋषभग्राम
५. तालाब, सर्प, पृथ्वी, सूर्य

प्रश्न ३. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। (१०)

	जीवनिश्रित	**अजीवनिश्रित**
१. षड्जस्वर	.....	मृदंग
२. ऋषभस्वर	.....	.....
३. गांधारस्वर	हंस	.....
४. मध्यमस्वर	.....	.....
५. पंचमस्वर	.....	गोधिका
६. धैवतस्वर	.....	.....
७. निषादस्वर	हाथी	.....

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। (६)

१. संघात
२. उपक्रम
३. औदयिक भाव
४. साधर्म्योपनीत

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं के अर्थ लिखिए। (४)

१. तो समणो जइ सुमणो, भावेण य जइ ण होइ पावमणो।
सयणे य जणे य समो, समो य माणाऽवमाणेसु।।

P.T.O

२. जह दीवा दीवसंत पइप्पए, दिप्पए य सो दिवो।
दीवसमा आयरिया दिप्पंति, परं च दीवेंति।।

३. सत्त सरा तयो गामा मुच्छणा एक्कवीसति।
ताणा एगूणपण्णासं सम्मत्तं सरमंडलं।।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. समास के भेद लिखिए।

२. संस्थान पश्चानुपूर्वी लिखिए।

३. सात नारक की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

४. अनादि पारिणामिकभाव कौन-से हैं, लिखिए।

५. गणनासंख्या के अनन्त के भेद-प्रभेद लिखिए।

६. विभागनिष्पन्नक्षेत्रप्रमाण कौन-से हैं, लिखिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. स्कन्ध के पर्यायवाची नाम कौन-कौन-से हैं, समझाइए।

२. उत्कीर्तनानुपूर्वी और गणनानुपूर्वी का निरूपण कीजिए।

३. त्रिनाम का स्वरूप समझाइए।

४. अष्टनाम का निरूपण कीजिए।

५. शरीर के प्रकार की व्याख्या करके २४ दण्डकवर्ती जीवों में कौन-से शरीर पाये जाते हैं, लिखिए।

६. वसति दृष्टान्त द्वारा नय का निरूपण कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के विस्तृत जवाब लिखिए। **(३०)**

१. तद्धित से निष्पन्न नाम का स्वरूप विस्तार से समझाइए।

२. उत्सोधांगुल किसे कहते हैं? उसके प्रयोजन पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

३. इस आगम के आधार पर चारित्रगुणप्रमाण का निरूपण कीजिए।

४. द्रव्य आवश्यक का निरूपण कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

भगवती सूत्र – शतक १ से १४

प्रश्न १. एक शब्द में जबाब लिखिए। (५)

१. किस अनगार ने त्रायस्त्रिंशक देवों के अस्तित्व संबंधी प्रश्न पूछे है?
२. विक्रिया के प्रारंभ करने पर होनेवाला समुद्घात कौन-सा है?
३. नैरियक जीव किस द्रव्यों का आहार करते हैं?
४. लिपिबद्ध श्रुत कौन-सा श्रुत है?
५. देव कौन-सी भाषा बोलते हैं?

प्रश्न २. अंको में जबाब लिखिए। (५)

१. पूरण तपस्वी ने कितने वर्षों तक प्रवज्या का पालन किया था?
२. उत्पल जीव की उत्कृष्ट अवगाहना कितने योजन की है?
३. नामकर्म का आबाधाकाल कितने हजार वर्ष का है?
४. मोहनीय कर्म के उदय से कितने परिषह होते हैं?
५. लोकान्तिक देवों के कितने भेद हैं?

प्रश्न ३. उचित पर्याय चुनकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. सातवीं नरक में ..... ही उत्पन्न होते हैं। (सम्यक्त्वी, मिथ्यात्वी, मिश्रदृष्टि)
२. दर्शनभ्रष्ट लिंगी साधु का उदाहरण ..... है। (जमाली, गोशालक, कपिल)
३. मांस, रक्त, दिमाग ..... के अंग कहे गए हैं। (माता, पिता, पुत्र)
४. सयोगी जीव नियमतः ..... होते हैं। (सप्रदेशी, अप्रदेशी, देशी)
५. भ. महावीर देवानंदा के ..... है। (जमाई, पिता, पुत्र)

प्रश्न ४. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. शंख श्रमणोपासक	–	अ. प्रथम शतक
२. तामली तापस	–	आ. तृतीय शतक
३. रोह अणगार	–	इ. ११ वां शतक
४. शिवराजर्षि	–	ई. नवम शतक
५. जमाली	–	उ. १२ वां शतक

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। (१०)

१. क्षायोपशमिक भाव २. आलापन बंध ३. कृष्ण पाक्षिक

P.T.O

४. आजीवक ५. कर्मादान ६. छद्मस्थ

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. क्रोध से आर्त बना हुआ जीव कौन-से कर्म बांधता है?

२. विकलेन्द्रिय जीव ज्ञानी है या अज्ञानी; स्पष्ट कीजिए।

३. संज्ञा की परिभाषा एव भेदों को लिखिए।

४. सिद्ध भगवान सवीर्य है या अवीर्य? कैसे?

५. चन्द्रमा को शशि क्यों कहा जाता है?

६. श्रुतज्ञान का विषय कितना है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. परिष्ठापन के लिए शास्त्र में कितने और कौन-कौन-से विशेषण बताए हैं?

२. शास्त्र की उपादेयता के लिए कौन-कौन-सी बातें बताई गई है?

३. जीव एक भव में एक ही आयुष्य का वेदन कैसे करता है?

४. जागरिका की परिभाषा लिखते हुए उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

५. जीवों का दक्षत्व अच्छा या आलसीपन अच्छा?

६. अन्तक्रिया के स्वरूप को सोदाहरण लिखिए।

७. पंडितमरण के भेदों को समझाइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. उदायन राजा का परिचय देते हुए उनके जीवन से क्या सीख मिलती है; लिखिए।

२. कालोदयी और भगवान महावीर स्वामी के बीच हुई चर्चा को स्पष्ट कीजिए।

३. कार्मण शरीर प्रयोगबंध के भेदों को विस्तार से लिखिए।

४. पुद्गल परिवर्त के स्वरूप को विस्तार से लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२१ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सन्मति तर्क प्रकरण)

प्रश्न १. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. भावनिक्षेप ..... नय का विषय है। (द्रव्यास्तिक, पर्यायास्तिक, संग्रहनय)

२. ..... का लक्षण उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य है। (सत्, असत्, सतासत्)

३. ..... के चार असाधारण गुण है। (जैन शासन, बौद्धशासन, धर्म शासन)

४. अभिलाप्य अर्थात् .....। (वक्तव्य, अवक्तव्य, वक्तव्यावक्तव्य,)

५. रत्न पानीदार और ..... होते हैं। (अमूल्य, मूल्यवान, कीमती,)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. सात वाक्य की रचना	–	अ. सिद्धसेन दिवाकर सूरि
२. सन्मति तर्क प्रकरण	–	ब. द्रव्यास्तिक नय
३. सन्मति की भाषा	–	क. सप्तभंगी
४. सविकल्प अर्थात्	–	ड. प्राकृत
५. दर्शन	–	इ. नास्ति

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. सहवादी कितनी दलीले करता है? कौन-सी?

२. पुरुष में भिन्नाभिन्न रूप कैसे सिद्ध होता है?

३. आत्मा की कितनी शक्तियां है? कौन-सी?

४. तत्त्व-प्ररूपणा की योग्य रीति बताइए।

५. दर्शन और ज्ञान की व्याख्या लिखिए।

६. द्रव्यास्तिक नय का विषय क्या है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. समिति तर्क की रचना का जैन वाङ्मय पर क्या प्रभाव पडा?

२. ज्ञान और दर्शन इन दोनों के बीच क्या अंतर होता है?

३. पर्यायास्तिक नय की व्याख्या एवं भेदों को स्पष्ट कीजिए।

४. उत्पाद कितने प्रकार का है, सपरिभाषा स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. क्या केवल ज्ञान सादि अपर्यवसित है; स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

२. द्रव्य विशेष परिणाम वाला है या नहीं स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली भाग २)

प्रश्न ६. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में दीजिए। **(५)**

१. आचार्य आत्मारामजी म. सा. के गुरु का नाम क्या था?

२. काका कालेलकर की मातृभाषा कौन सी थी?

३. ज्वर का तापमान किससे मापते हैं?

४. बुद्ध की दया कैसी दया है?

५. मित का अर्थ क्या है?

प्रश्न ७. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. जैन एकता यह किताब ..... ने लिखी है। (डॉ. सागरमल, डॉ. शिवाजीराव)

२. वादीदेवसूरि ने ..... लिखा। (प्रमाण मीमांसा, स्याद्वाद रत्नाकर)

३. आचार्य स्कंधक ..... देव बने। (वायुकुमार, अग्निकुमार)

४. ..... का अर्थ है वास्तविक या सत्य। (स्याद्वाद, सापेक्षवाद)

५. व्यवहार को ..... सम्यक्त्व कहा है। (द्रव्य, भाव)

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. ईसा ने किस संघ की स्थापना की और वह कहां-कहां फैला?

२. प्रो. शिवाजीराव भोसले किस-किस विषय पर प्रवचन देते हैं?

३. आधुनिक काल में होनेवाले धर्म चिंतकों के नाम लिखिए।

४. मुजफ्फर हुसैन ने कितने 'अ' बताएं हैं? कौन-से?

५. लेश्याओं के नाम लिखकर उनके रंग लिखिए।

६. अनुभाविक विधि क्या है; समझाइए।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. आवीचिमरण, वशार्तमरण और बालमरण की परिभाषाएं एवं स्वरूप लिखिए।

२. अयोगी केवली का स्वरूप तथा योग निरोध का क्रम लिखिए।

३. महावीर और बुद्ध में क्या फर्क था; लिखिए।

४. नव्यन्याययुग की विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ईश्वर सर्वव्यापक है या नहीं स्पष्ट कीजिए।

२. विचार शक्ति को कैसे विकसित करेंगे?

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४८ **द्वितीय खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२१ **समय: घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

विशेषावश्यकभाष्य

प्रश्न १. निम्न बातें कौन–से अंगुल से नापी जाती है, लिखिए। **(५)**

१. मेरु पर्वत २. नारकी का शरीर ३. मकान की ऊंचाई
४. सिद्धशीला ५. चुक्षुरिन्द्रिय के विषय का प्रमाण

प्रश्न २. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. वेदनीयकर्म की जघन्य स्थिति कितने मुहूर्त की होती है?
२. मन:पर्यव ज्ञानी कौन–से जीवों के मनोगत भावों को जानता है?
३. विशेषावश्यक भाष्य के रचयिता कौन है?
४. भाषा कौन–से योग से ग्रहण की जाती है?
५. व्यञ्जनावग्रह में श्रोता को कौनसा ज्ञान होता है?

प्रश्न ३. निम्न पदों को नमस्कार करने के हेतु लिखिए। **(५)**

१. अरिहंत २. सिद्ध ३. आचार्य
४. उपाध्याय ५. साधु

प्रश्न ४. निम्न वाक्य सही है या गलत पहचानकर लिखिए। **(५)**

१. आर्य रक्षिताचार्य ने अनुयोग के तीन अलग–अलग विभाग किए।
२. आर्य रक्षिताचार्य ने दुर्बलिका पुष्पमित्र को आचार्य पद पर स्थापित किया।
३. भगवान महावीर के निर्वाण के १४ वर्ष बाद जमालि नाम का निन्हव हुआ।
४. सम्यक्त्व सामायिक की उत्कृष्ट स्थिति ६६ सागरोपम और पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक है।
५. अरिहंतादि को नमस्कार करना ये भाव नमस्कार है।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. परिकर्म २. सूत्र ३. यथाख्यात चारित्र
४. अवग्रह ५. सामायिक ६. परिषह

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. श्रुत ज्ञान के कोई ४ भेद लिखिए।
२. कोई ४ ऋद्धियों के नाम लिखिए।
३. प्रवचन के समानार्थक कोई ४ नाम लिखिए।
४. सम्यक् दर्शन के समानार्थक कोई ४ नाम लिखिए।
५. समाचारी के कोई ४ भेद लिखिए।

P.T.O

६. सूत्र के कोई ४ गुण लिखिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. केवलज्ञान की गति आदि द्वारों में सत्पदप्ररूपणा कीजिए।

२. परिहार विशुद्धि चारित्र का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

३. उपशम श्रेणि का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

४. काल द्वार की अपेक्षा कौनसी सामायिक कब होती है, स्पष्ट कीजिए।

५. ग्रंथ के आधार पर इन्द्रिय के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

६. नय किसे कहते हैं? उसके भेद-प्रभेदों को संक्षेप में समझाइए।

७. आयुष्य कितने प्रकार से क्षय होता है, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ग्रंथ के आधार पर मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में क्या-क्या समानता है और क्या-क्या भिन्नता है, विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. ग्रंथ के आधार पर तीर्थ के स्वरूप को विस्तार से समझाइए।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'कर्म है या नहीं' ऐसा संशय कौन-से गणधर को था? भगवान ने उसका समाधान कैसे किया? विस्तार से समझाइए।

२. तिष्यगुप्त निह्नव की क्या मान्यता थी? उसका खण्डन कीजिए।